Postal Registration No. CHD/0107/2021-2023 Posted at MBU Chandigarh RNI No. CHABIL/2000/3469

हिन्दी/अंग्रेजी मासिक पत्रिका

दीन बन्धु सर छोटूराम

जाट लहर

जाट सभा, चण्डीगढ़ के सौजन्य से प्रकाशित

वर्ष 23 अंक 08 30 अगस्त, 2023 मूल्य 5 रुपये

प्रधान की कलम से

चौधरी लखीराम पूनिया, आईपीएस(रिटायर्ड) एक अविस्मरणीय शख्सियत

(21.09.1930 से 14.08.2023 तक)

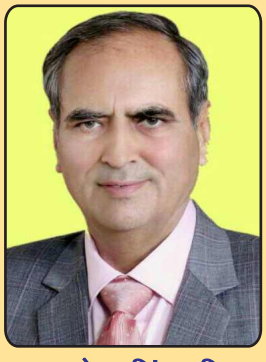

डा. महेन्द्र सिंह मलिक

चौधरी लखीराम पूनियां का जन्म हरियाणा के एक किसान परिवार गांव बिचपड़ी, तहसील गोहाना जिला सोनीपत में दिनांक 21.09.2023 को हुआ। उन्होंने सारा बचपन गांव में ही व्यतीत किया। उनके पिता जी चौधरी मेघराम थे। जिनके केवल एक लड़का और एक लड़की थी। मेघराम की पत्नी दोनों बच्चों को बचपन में ही छोड़कर स्वर्गवास सिधार गई। दोनों बच्चों का पालन पोषण चौधरी मेघराम ने ही किया। मेघराम के लड़के का नाम चौधरी लखीराम था। गांव के बड़े किसान के सुपुत्र थे लेकिन उनकी माताजी का छोटी उम्र में ही स्वर्गवास होने के कारण 14 साल की उम्र में ही चौधरी लखीराम की शादी, गांव शामड़ी की लड़की धनपति देवी जिनकी उम्र 13 वर्ष थी के साथ हो गई थी।

चौधरी लखीराम ने चौथी कक्षा तक पढ़ाई गांव से ही की और आठवीं कक्षा जनता बुटाना स्कूल से पास की। उसके बाद दसवीं की पढ़ाई सरकारी हाई स्कूल गोहाना से की। पढ़ाई में हमेशा अपनी कक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करते रहें और बी.ए. की पढ़ाई जाट हिरोज़ मैमोरियल कॉलेज रोहतक से पास की।

इसके बाद उन्होंने पारसी में पंजाब यूनिवर्सिटी में प्रथम स्थान प्राप्त करते हुए स्वर्ण पदक प्राप्त किया। 1952 में पंजाब यूनिवर्सिटी में पारसी में बी.ए. पास की। 1954 में इतिहास विषय में एम.ए. की डिग्री पास की। उसके बाद तुरंत पंजाब सहकारी विभाग में निरीक्षक भर्ती हुए। उसके बाद 1957 में पंजाब लोक सेवा आयोग के मार्फत पंजाब पुलिस में सीधे निरीक्षक के रूप में उनका चयन हुआ। तत्पश्चात उनकी डयूटी अमृतसर, फिरोजपुर, जालंधर आदि थानों में पुलिस निरीक्षक बतौर इंस्पेक्टर रही। उन्होंने इस दौरान एक अनुभवी उत्तम सोच अधिकारी होने का गौरव हासिल किया। 1962 में जब वह शिमला थे तो उनकी पदोन्नति बतौर उपअधीक्षक पुलिस हो गई। उसके बाद 1965 में भारत पाकिस्तान युद्ध में मेजर जरनल उमराव सिंह एम.वी.सी. के अधीन और श्री अश्वनी कुमार, आई.पी.एस. के मार्गदर्शन पर पंजाब आरम्ड पुलिस का नेतृत्व करते हुए एक अहम भूमिका निभाई। हरियाणा बनने के उपरांत 1966 में वे हरियाणा पुलिस में डीएसपी करनाल, कुरुक्षेत्र, मेवात आदि में रहे। जहां उन्होंने दंगे–फसाद और गौ तस्करी पर पूर्ण रूप से अंकुश लगाया और वहां प्रथम गौशाला स्थापित की। सेवा के दौरान गायों को चारा और राशन आजीवन दान करते रहे। सेवानिवृत होने के बाद अपनी साढे चार एकड़ भूमि गांव पिंडारा, जिला जीन्द गौशाला को दान की। बाद में आईपीएस पदौन्नत होने पर बतौर एसएसपी करनाल, महेंद्रगढ़, हिसार आदि में रहे। वह एक जाने–माने पुलिस अधीक्षक और अच्छे प्रशासक रहे। एसपी के तौर पर सामाजिक तनाव को भी अपने सूझबूझ और पुलिस सोच से ऊपर उठकर स्थिति को काबू कर शांति कायम करते रहे। वर्ष 1978 में आईपीएस पदोन्नत होकर बतौर अधीक्षक पुलिस करनाल शहर में लगे, जहां इन्होंने सर्राफा बाजार में गुरुद्वारे व मंदिर का झगड़ा शांतिपूर्वक निपटा कर वहां मंदिर बनवाया और दोनों में शांति कायम की और दोनों को सुरक्षित रखा। अपनी पूरी ईमानदारी और कर्तव्यनिष्ठता से शानदार पुलिस सेवा करते हुए 30.9. 1988 में सेवानिवृत हुए। जीवन के अंतिम समय तक सामाजिक सेवा और लोकहित सेवा के लिये संघर्ष करते रहे। अपनी निजी पेंशन में से 25000, 25000 रुपये विभिन्न गौशालाओं में और अपाहिज बच्चों के स्कूलों को दान देते रहे। आखिरकार 93 वर्ष की आयु होने पर रोहतक हस्पताल में 14 अगस्त 2023 को शाम 6:30 बजे अपनी अंतिम सांस ली और स्वर्ग सिधार गये। परिवार में एक लड़का और तीन लड़कियां को छोड़ गए। उनके सुपुत्र श्री ध्यान सिंह पुनिया, कमांडेन्ट थर्ड बटालियन हरियाणा पुलिस हिसार, पुत्रवधू प्रोफेसर सविता पूनिया, दामाद डॉ० महेन्द्र सिंह मलिक, आईपीएस (सेवानिवृत्त) पूर्व पुलिस महानिदेशक हरियाणा, जो जाट सभा चडीगढ़, पंचकूला तथा चौ० छोटूराम सेवा

शेष पेज–2 पर

शेष पेज–1

सदन कटरा, जम्मु के प्रधान के साथ–साथ अन्य कई सामाजिक व लोकहित संस्थाओं के भी प्रधान/अध्यक्ष है। प्रधान की अच्छी और साकारात्मक सोच से सभी संस्थान सफलतापूर्वक कार्यरत है। हाल ही में इन्होंने निड़ानी में सैनिक ट्रेनिंग संस्था खोली है। जिस संस्था के अभी हाल ही में 15 छात्र एन.डी.ए. में भर्ती हुये है। श्री राम सिंह मलिक, पूर्व खाद्य आपूर्ति डिप्टी डायरेक्टर हरियाणा, सुपुत्री श्रीमती कृष्णा मलिक, चेयरपर्सन चौधरी भरत सिंह मेमोरियल स्पोर्टस शिक्षण संस्थान, निड़ानी, जीन्द। इन दोंनो संस्थानों के छात्र और छात्राओं ने विश्व स्तर पर तथा औंलम्पिक खेलों में स्वर्ण पदक प्राप्त किये। जिनमें से तीन छात्राओं को राष्ट्रपति द्वारा अर्जुन अवार्ड दिया गया है। श्रीमती कृष्णा मलिक, गुरूकुल खानपुर की भी अध्यक्ष रही है। जिन्होंने अपने कार्यकाल में काफी कोर्स को बढ़ावा दिया जैसे नर्सनिंग आदि संस्थाओं की स्थापना की।

चौ० लखीराम पूनियां हरियाणा प्रांत बनने पर हरियाणा पुलिस कैडर तथा बाद में भारतीय पुलिस सेवा में प्रवेश करने का गौरव प्राप्त किया। चौधरी लखीराम पुनियां जी की एक परिश्रमी, दंबग एवं स्पष्टवादी पुलिस अधिकारी के तौर पर विशिष्ट पहचान रही है जिन्होंने अपनी समस्त सेवा के दौरान अपने सिद्धांतों व स्वाभिमान से कभी समझौता नहीं किया।

हरियाणा प्रांत में करनाल, भिवानी, हिसार आदि जिलों में वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक के रूप की गई सेवाओं के लिए प्रदेश के मुख्य मंत्रियों, पंडित भगवत दयाल शर्मा जी, मास्टर हुकुम सिंह, श्री बनारसी दास गुप्ता, चौधरी देवीलाल, चौधरी बंसीलाल, चौधरी भजनलाल और औम प्रकाश चौटाला ने उनके कार्यकाल में उनके उल्लेखनीय कार्यों व मजबूत कानून व्यवस्था बनाये रखने पर प्रशंसा की जिस कारण उनको आज भी एक दबंग पुलिस अधिकारी के तौर पर जाना जाता है। चौधरी लखीराम एक सुलझे हुए अनुभवी पुलिस अधिकारी रहे, जिस कारण उनके कार्यकाल में कहीं भी दंगा फ्साद नहीं हुआ। जब प्रदेश में आतंकवाद का माहौल था, उस समय भी उन्होंने संयम वह सुझबूझ से शांति बनाए रखी।

वे देश सेवा के साथ–साथ सामाजिक व लोकहित कार्यों में भी बढ़–चढ़कर भाग लेते थे और सदैव राष्ट्रवाद और भाईचारा के समर्थक रहे और गौ माता की रक्षा के लिए अपना जीवन सेवारत रखा और गौशाला निर्माण के लिए दान देते रहे। चौधरी लखीराम का लेखन व उर्दू साहित्य के प्रति भी विशेष लगाव था। वह उर्दू के मशहूर शायर/कवि डॉ० मोहम्मद इकबाल, मिर्जा गालिब के साहित्य तथा किसान मसीहा दीनबंधु चौधरी छोटू राम की किसान व समाज सुधारक नीतियों के सदैव कायल रहे। चौधरी लखीराम आज हमारे बीच नहीं रहे लेकिन उनकी मिलनसार सादगीपूर्ण, स्पष्टवादी व संघर्षशील छवि पहचान के तौर से हम सभी को स्मरणीय रहेगी।

चौधरी लखीराम जाट सभा चंडीगढ़ / पंचकूला एवं चौधरी छोटूराम सेवा सदन कटरा के आजीवन मेंबर भी थे चौधरी लखीराम पुनिया, आईपीएस (रिटायर्ड) एक महान व्यक्तित्व के धनी थे जाट सभा चंडीगढ़/पंचकूला एवं चौधरी छोटूराम सेवा सदन कटरा, जम्मू के सभी सदस्यगण, चौधरी लखीराम पुनिया, आईपीएस (रिटायर्ड) की दिवगंत आत्मा को सदैव नमन करते रहेंगे।

डॉ० महेन्द्र सिंह मलिक, आई.पी.एस. (सेवा निवृत)
पूर्व पुलिस महा निदेशक हरियाणा,
प्रधान अखिल भारतीय शहीद सम्मान संघर्ष समिति व
जाट सभा, चंडीगढ़ व पंचकूला एवं
चेयरमैन, चौ० छोटूराम सेवा सदन, कटरा, जम्मू

एक महान आत्मा भगत फूल सिंह

– श्रीमती कृष्णा मलिक, चेयरपर्सन
चौधरी भरत सिंह मेमोरियल स्पोर्टस शिक्षण संस्थान,
निड़ानी, जीन्द

अमर हुतात्मा नारी जाति का उत्थान करने व नारी शिक्षा का प्रचार–प्रसार का श्रेही भगत फूल सिंह।

हरियाणा में नारी शिक्षा के प्रचार प्रसार का श्रेय भगत फूल सिंह को जाता है। उनका जन्म जिला सोनीपत के ग्राम माहरा में 6 अगस्त 1885 में हुआ। आपके पिता एक साधारण किसान थे। आठ वर्ष की अवस्था में आपको पास के गांव में प्रारम्भिक शिक्षा के लिए भेजा। बाल्यकाल से ही आपमें सेवाभाव, सरलता, सदाचार, और निर्भयता आदि के गुण थे।

शिक्षा के बाद आप पटवारी बने। लेकिन समाज सेवा की धुन सिर पर स्वार थी, अतः नौकरी से त्यागपत्र दे दिया। अब आप सारा समय आर्यसमाज के प्रचार प्रसार में लगाने लगे। आपने त्यागपत्र देने के बाद एक बड़ी पंचायत बुलवाई और उसमे लेई गई रिश्वत की सारी धन राशि पैतृक सम्पति बेचकर वापिस लौटा दी।

गुरूकुल भैंसवाल की स्थापना :–

गुरुकुल भैंसवाल की आधार शिला स्वामी श्रद्धानंद जी ने सन् 1919 में रखी थी। उन्हें देहली से सोनीपत रेलवे स्टेशन तक लाया गया। सभी गुरूकुल आर्य–भाईयों ने स्वामी श्रद्ध नंद जी के जयकारे लगाए। उन दिनों सडकें नहीं थी। उनको लाने के लिए रथ सजा कर ले जाया गया था। कुछ पल रथ में बैठ कर वे सबके साथ पैदल चले पूरे 12 कोस। हरियाणा ऋषियों की भूमि रही है। जब वे गुरूकुल भैंसवाल पहुंचे तो हजारों की संख्या मे लोग उपस्थित थे – वह दृश्य देखने योग्य था। परन्तु उन दिनों यातायात के साधन नहीं थे। गुरूकुल का प्रथम उत्सव 1920 में, जेठ मास में तीन दिन चला। सर्वत्र चर्चा थी कि भगत जी ने जंगल में मंगल बना दिया। स्वामी श्रद्धानंद जी ने दान की अपील की। 20,000 रू० तत्काल एकत्रित हुए। दाखिले बच्चों के हुए प्रतिवर्ष शास्त्री – स्नातक निकलते थे, अनेकों स्नातकों में गौरक्षा– आन्दोलन, हिन्दी–आन्दोलन एंव हैदराबाद आन्दोलन में भाग लिया। जो जेल गए थे उन्हें 'स्वतंत्रता सेनानी' घोषित किया गया था और वे आजीवन पैंशन पाते रहे। अनेकों ने धार्मिक प्रचार में, अध्यापन क्षेत्र में समाज सुधार में भाग लिया। स्वर्गीय श्री विष्णु मित्र जी विद्यामार्ताडे की उपाधि से घोषित किए गए। वे हरियाणा में बड़े लोकप्रिय वक्ता एवं लेखक थे। भगत जी गुरूकुल के छोटे–छोटे बच्चों की रखवाली के लिए माता "धुप कौर" को भैंसवाल लाए थे उन्होंने पीले वस्त्र धारण किए थे।

सार्वजनिक समस्याओं के समाधान के लिए अनशन करना:–

भगत जी का जीवन ग्रामीण उत्थान के लिए समर्पित था। आस–पास के गांव के व्यक्ति अपनी समस्याओं को लेकर आते थे नहीं हल करते थे – सहमति नहीं बनती थी पंचायत घरों में तो वे अनशन करके बैठ जाते थे।

कन्याओ की शिक्षा में योगदान :–

भक्त जी कन्याओ की शिक्षा के लिए विशेष चिंतित थे, अतः 1936 में खानपुर के जंगल में कन्या गुरुकुल की स्थापना की। इस गुरुकुल में आज अनेक विभाग हैं जैसे – कन्या गुरुकुल, डिग्री कॉलेज, आयुर्वेदिक कॉलेज, बी–एड आदि। सन 1937–38 में लाहौर में कसाईखाना बंद करने में आपका प्रमुख योगदान था। हैदराबाद रियासत के आर्यसत्याग्रह में आपने ७०० सत्याग्रही हैदराबाद भेजे।

जिला हिसार के मोठ नामक गांव के चमार बंधुओ ने कुआं बनवाना आरम्भ किया। मुसलमानों ने इसका विरोध किया। मोठ के चमार बंधु निराश होकर भक्त जी के पास आये और अपनी कष्ट भरी गाथा सुनाई। भक्त जी ने उन्हें कुआं बनवाने का आश्वासन दिया और 1 सितबर 1940 को मोठ पहुंच गए। उन्होंने लगातार तीन दिनों तक गाँव के मुसलमानों को समझाया।मुसलमानों पर उनकी बातों का कुछ भी प्रभाव नहीं पडा। भक्त जी ने आमरण अनशन शुरू कर दिया और कहा 'कुआं बनने पर ही अन्नग्रहण करूगा, अन्यथा यहीं प्राण त्याग दूंगा।' मुसलमानों ने भक्त जी को तीन चार दिन बाद उठा कर जंगल में फेंक दिया। भक्त जी बच गए और पुनः 23 दिन के उपवास के बाद उन्हें अपने कार्य में सफलता मिल गई। कुआं बना और चमार बंधुओं की पानी की समस्या हल हो गई।

विश्व वंद्य महात्मा गांधी जी ने उपरोक्त घटना के विषय में जब सूना तो बहुत प्रसन्न हुए और भक्त जी से मिलने की इच्छा प्रकट की। भक्त जी दिल्ली आये और बापू से लगभग डेढ़ घंटे तक वार्तालाप चला। बापू ने भक्त जी से कहा, आप आर्यसमाज को छोड़कर मेरे कार्यक्रम के अनुसार कार्य कीजिये। समय–समय पर मैं आपको यथाशक्ति मदद देता रहूँगा, इससे आप देश की अधिक सेवा कर सकेंगे। भक्त जी ने निश्छल भाव से कहा –महात्मा जी मैं आपकी सब आज्ञाओं को मानने को तैयार हूँ परन्तु आर्यसमाज को नहीं छोड़ सकता क्योंकि ऋषि दयानंद और आर्यसमाज तो मेरे रोम रोम में समा चुके हैं।

देहांत :–

भक्त जी ने सामाजिक कुरीतियों को मिटाने के लिए कई बार आमरण अनशन किये और अपनी पत्रिक संपत्ति तक बेच कर सामजिक कार्यों में लगा दी।

महिला विश्वविद्यालय की स्थापना :–

भक्त फूलसिंह के नाम पर हरियाणा के सोनीपत जिले के खानपुर गांव में महिला विश्वविद्यालय की स्थापना की गई है।

20 वर्ष की आयु में आपका विवाह धूपांदेवी नामक सुशील कन्या से हुआ।

भक्त फूलसिंह जी के महान् कार्य निम्न प्रकार से हैं :–

1. लगभग सन् 1916 ई० ग्राम संभालका (जि० करनाल) में हत्था खुलने का निश्चय हुआ। पता लगने पर भक्त जी ने बड़ी संख्या में लोगों को साथ लेकर हत्था रोकने के लिए चढ़ाई कर दी। करनाल के डिप्टी कमिश्नर को विवश होकर कहना पड़ा कि "यहां गोवध नहीं होगा।"
2. सन् 1937–38 में लाहौर में पचास लाख रुपये से पंजाब गवर्नमेंट द्वारा खुलने वाले प्रसिद्ध हत्थे को बन्द करवाने में भक्त जी महाराज का विशेष हाथ रहा था।
3. आपने 23 मार्च 1920 ई० को गुरुकुल भैंसवाल की स्थापना की जिसकी आधारशिला श्रद्धानन्द जी ने रखी। अब तक यह संस्था यथाशक्ति आर्यसमाज व वैदिक–धर्म की सेवा कर रही है।
4. आपने कन्या गुरुकुल खानपुर की स्थापना सन् 1936 ई० में की जिसका संचालन आपकी पुत्री श्रीमती सुभाषिणी देवी कर रही थी।
5. भक्त जी ने लोगों की आर्थिक दशा सुधारने के लिए विवाह आदि अवसरों पर फिजूलखर्ची को रोकने के लिए सन् 1925 में ग्राम गांधरा (जि० रोहतक) में हरयाणा प्रांत की सब खापों की एक बड़ी भारी पंचायत बुलवाई। इस अवसर पर बहुत से उपयोगी प्रस्ताव पास करवाये।
6. सन् 1928 ई० में भक्त जी को यह पता चला कि होडल और पलवल के कुछ मूळे जाट पुनः शुद्ध होना चाहते हैं तो वहां पहुंच गये। इस शुद्धि के उपरान्त बेटी और रोटी के सम्बन्ध में जाटों की एक पंचायत बुलाई। इस काम में एक जेलदार बाधा डालता रहा, जेलदार को उचित मार्ग पर लाने के लिए आपने ग्यारह दिन का उपवास रखा। अन्त में चौ० छोटूराम के आश्वासन पर आपने अपना अनशन व्रत समाप्त किया।
7. सन् 1929 के जून में आपने रायपुर ग्राम के केहरीसिंह नामक एक मूळा जाट को शुद्ध करके वैदिक धर्मी बनाया। श्री हरद्वारीसिंह ने अपनी लड़की का विवाह केहरीसिंह से कर दिया। इस विवाह में भात्ती बनने का कार्य भक्त फूलसिंह जी ने किया।
8. ग्राम मोठ (जि० हिसार) के चमारों का कुंआ मुसलमान रांघड़ों ने बनता–बनता बन्द करवा दिया। यह सूचना मिलने पर आपने आमरण अनशन व्रत कर दिया। अर्थात् "कुंआ बनने पर ही उसका पानी पीकर व्रत खोलूंगा अन्यथा यहीं प्राण त्याग दूँगा।" ईश्वर की कृपा से 23 दिन के उपवास के बाद आप अपने कार्य में सफल हुए।
9. 31 जनवरी 1939 से आरम्भ होकर 17 अगस्त 1939 में समाप्त होने वाले हैदराबाद सत्याग्रह में हरयाणा के आर्य भाइयों ने अपना अमिट योगदान दिया। इसका विशेष श्रेय भक्त जी महाराज की कार्यकुशलता व प्रभाव को समझना चाहिये।
10. लोहारू काण्ड – सन् 1941 ई० में आर्यसमाज के उत्सव पर भक्त फूलसिंह जी, स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी के साथ लोहारू पहुंचे। आर्यसमाज के जलूस पर मुसलमानों ने आक्रमण कर दिया। इस आक्रमण में भक्त जी को गहरी चोटें आईं और वे मूर्च्छित हो गये।

इस प्रकार हम देखते हैं कि भक्त फूलसिंह जी ने अपना सारा जीवन आर्यसमाज की सेवा में अर्पित कर दिया।

बलिदान :–

मुसलमान आपके शुद्धि कार्य से अप्रसन्न थे और सदा आपको मारने की ताक में रहते थे। 14 अगस्त 1942 ई० को श्रावण सुदी द्वितीया को रात के साढ़े नौ बजे पांच मुसलमान घातक, सैनिकों का वेश धारण करके भक्त जी के कालरूप में आये। उस रात भक्त जी कन्या गुरुकुल खानपुर में ही विश्राम कर रहे थे। नराधमों ने बैट्री की प्रकाश करके भक्त जी पर पिस्तौल के तीन फायर किये, जिससे आप वीरगति को प्राप्त हुए। मृत्यु के समय मुख से ओ३म् ही निकला। आपका नाम सदा अमर रहेगा। आप पर जाट जाति एवं भारतवासियों को गर्व है। ऐसे महान, त्यागी, कर्मनिष्ठ और सर्वत्यागी संत को शत–शत नमन!

रूस्तमेहिन्द व हिन्द केसरी चौ. दारा सिंह रंधावा

– जयपाल सिंह पूनियां, एम.ए. इतिहास,
वन मंडल अधिकारी (सेवानिवृत)

चौ. दारा सिंह का जन्म 19 नवंबर, 1928 में पंजाब के अमृतसर जिला के धरमूचक गांव के किसान/जाट परिवार में हुआ था। इनके पिता जी का नाम श्री सूरत सिंह रंधावा और माता जी का नाम श्रीमति बलवंत कौर था। इनका एक भाई था जिनका नाम श्री सरदार सिंह रंधावा था। इनका बचपन का नाम दीदार सिंह था। इनका विवाह श्रीमति सुरजीत कौर से हुआ था। इससे पहले इनका विवाह श्रीमति बचनो कौर से हुआ था। दोनों पत्नियों से इनके 7 बच्चे थे। जिनमें बड़ा बेटा प्रदुमन सिंह रंधावा मेरठ में रहते हैं और छोटा बेटा बिन्दू दारा सिंह बंबई में रहता है।

चौ. दारा सिंह रंधावा जी अपने जमाने के विश्व कुश्ती चैंपियन रहे हैं। उन्होंने 500 कुश्तियां लड़ी और कभी नहीं हारे। सन् 1959 में पूर्व विश्व कुश्ती चैंपियन जार्ज गारडियान्का को हराकर कामनवैल्थ की चैंपियनशिप जीती थी। 1968में अमेरिका के विश्व चैंपियन लाऊथेज को हराकर फ्रीस्टाईल कुश्ती के विश्व चैंपियन बने। उन्होंने 55 वर्ष की आयु तक पहलवानी की और 500 मुकाबलों में किसी एक में भी पराजय का मुंह नहीं देखा। 1983 में उन्होंने अपने जीवन का अंतिम मुकाबला जीतने के बाद कुश्ती से सम्मानपूर्वक सन्यास ले लिया था। 1960 के दशक में पूरे विश्व में उनका फ्रीस्टाइल कुश्तियों में बोलबाला रहा। श्री दारा सिंह ने 1955 में 200 किलो वजनी किंग कोंग को भी हरा दिया था। 1947 में वे सिंगापुर आ गए थे। वहां रहते हुए उन्होंने भारतीय स्टाइल की कुश्ती में मलेशियाई चैंपियन तरलोक सिंह को हरा कर कुवालालंपुर में मलेशियाई कुश्ती चैंपियनशिप जीती। उसके बाद उनका विजयी रथ कभी नहीं रूका और विश्व के अन्य देशों की तरफ चल पड़ा। उन्होंने पेशेवर पहलवान के रूप में अपनी धाक जमाकर वे 1952 में अपने वतन की तरफ लौट आए। भारत आकर 1954 में वे भारत में रूस्तमें हिंद और हिन्द केसरी बने। किंग कांग के बारे में कहा जाता है कि दारा सिंह ने किंग कांग की एक तरफ की मूंछ उखाड़ दी थी।

सन् 1959 में कलकत्ता कामन वैल्थ चैंपिययनशिप में कनाडा के चैंपियन जार्ज गारडियान्का एवं न्यूजीलैंड के जान डिसिल्वा को धूल चटाकर यह चैंपियनशिप भी अपने नाम की। दारा सिंह ने उन सभी देशों का एक–एक करके दौरा किया, जहां फ्रीस्टाइल कुश्ती लड़ी जाती थी। 1983 ई. में अपने जीवन का आखिरी मुकाबला जीता और भारत के राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह के हाथों अपराजेय पहलवान का खिताब अपने पास बरकरार रखते हुए कुश्ती से सम्मानपूर्वक विदाई ली।

सन् 1960 के दशक में पूरे भारत और विश्व की फ्रीस्टाइल कुश्तियों में उनका बोलबाला रहा। बाद में उन्होंने अपने समय की मशहूर अदाकारा मुमताज के साथ हिंदी की स्टंट फिल्मों में प्रवेश किया। दारा सिंह ने कई फिल्मों में अभिनय के अतिरिक्त निर्देशन व लेखन भी किया। उन्हें टी. वी. धारावाहिक रामायण में हनुमान के अभिनय से अपार लोकप्रियता मिली। उन्होंने अपनी आत्मकथा मूलतः पंजाबी में लिखी थी। जो 1993 में हिंदी में प्रकाशित हुई। उन्हें अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार ने राज्य सभा का सदस्य मनोनित किया। वे अगस्त 2003 से 2009 तक राज्य सभा के सदस्य रहे।

13 सितंबर, 1998 में दिल्ली में अखिल भारतीय जाट महासभा के अधिवेशन में दारा सिंह जी को अखिल भारतीय जाट महासभा का अध्यक्ष बनाया गया था और दारा सिंह जी इस पद पर मई 2012 तक विराजमान रहे। दिल्ली के अधिवेशन में चौ. अजित सिंह, चौ. महेंद्र सिंह टिकैत, डा. साहब सिंह वर्मा, चौ. प्रियव्रत, डा. बलबीर सिंह व कैप्टन भगवान सिंह इत्यादि उपस्थित थे। चौ. दारा सिंह के मरणोपरांत कैप्टन अमरेंद्र सिंह को अखिल भारतीय जाट महासभा का अध्यक्ष चुना गया जोकि आज भी इस पद को सुशोभित कर रहे हैं।

7 जुलाई 2012 को दिल का दौरा पड़ने के बाद उन्हें कोकिला बैन धीरूभाई अंबानी अस्पताल मुंबई में भर्ती कराया गया, किन्तु सघन चिकित्सा के बावजूद कोई लाभ न होता देख चिकित्सकों ने जब हाथ खड़े कर दिये तब उनहें उनके परिवारजनों के आग्रह पर 11 जुलाई 2012 को देर रात अस्पताल से छुट्टी दे दी गई और उनके मुंबई स्थित ''दारा विल्ला'' निवास लाया गया। जहां उन्होंने 12 जुलाई 2012 को सुबह साढ़े सात बजे आखिरी सांस ली। जैसे ही यह समाचार

प्रसारित हुआ कि ''पूर्व कुश्ती चैंपियन पहलवान व अभिनेता दारा सिंह जी नहीं रहे देशवासियों के दिलों में दुख की लहर फैल गई और कभी किसी से संसार में हार न मानने वाला अपने समय का विश्व विजेता पहलवान आखिरकार 84 वर्ष की आयु में अपने जीवन की आखिरी सांस पूर्ण कर गया। यह सुनकर उनके प्रशंसकों व शुभचिंतकों की अपार भीड़ उनके बंगले पर जमा हो गई। उनका अंतिम संस्कार जुहू स्थित श्मशान घाट में गुरुवार की शाम को कर दिया गया।

चौ. दारा सिंह के बारे में चौंकाने वाले/रोचक तथ्य और रहस्य :–

1. सन् 1954 ई. में दारा सिंह रूस्तम–ए–हिंद और 1968 में रूस्तम–ए–जहां बने।
2. 29 मई 1968 को विश्व चैंपियन लू थाईस को हराकर वे फ्रीस्टाइल कुश्ती के विश्व चैंपियन बने।
3. उन्होंने 55 वर्ष की आयु तक 500 कुश्ती लड़ी और सबमें विजयी रहे।
4. उन्हें टी.वी.सीरियल रामायण में हनुमान जी के अभिनय से अपार लोकप्रियता मिली। उन्होंने हिंदी, पंजाबी, भोजपुरी आदि लगभग 100 फिल्मों में सफल अभिनय किया।
5. फिल्मों की कुछ उल्लेखनीय भूमिकाएं जैसे– जब वी मेट, दिल अपना पंजाबी, डाकू मंगल सिंह, मेरा नाम जोकर, अजुबा, सिकंदरे–आजम् व रामायण में हनुमान आदि की महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
6. अगस्त 2003 से अगस्त 2009 तक वे राज्य सभा के सदस्य रहे पहलवान, अभिनेता व राजनितिज्ञ आदि जीवन के तीनों अभिनय सफलतापूर्वक निभाए।
7. 1968 में जब विश्व कुश्ती चैंपियनशिप जीती तो वे ऐसे पहले भारतीय थे, जिन्होंने विश्व चैंपियनशिप का खिताब हासिल किया।
8. हेलसिंकी में 1952 में ओलंपिक में कुश्ती में भारत का प्रतिनिधित्व किया और ओलंमपिक में गोल्ड मेडल जीता।
9. भारतीय सिनेमा में पहले सफल क्रॉसओवर अभिनेताओं में से एक माना गया।
10. छारा सिंह जी ने 1980 के दशम के अंत में प्रसारित टी.वी. सिरियल "रामायण" में भगवान राम के हनुमान के रूप में अपनी भूमिका के लिए अपार लोकप्रियता हासिल की।
11. दारा सिंह जी कई अन्य टी.वी. शो में भी दिखाई दिए और लोकप्रिय टी.वी. शो "महफिल" की मेजबानी की जिसमें भारतीय पारम्परिक संगीत और नृत्य का प्रदर्शन किया गया।
12. दारा सिंह जी अपनी परोपकारी गतिविधियों के लिए भी जाने जाते थे और जीवन भर विभिन्न धमार्थ कार्यों में शामिल रहें।
13. इन्हें खेल और मनोरंजन में उनके योगदान के लिए 1961 में भारत गणराज्य में चौथे सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार प्रतिष्ठित पद्श्री से सम्मानित किया गया।
14. उनका असली नाम दीदार सिंह रंधावा था बाद में दारा सिंह के नाम से मशहूर हुए।
15. उनका जन्म 19 नवम्बर, 1928 को अमृतसर के धर्मचुक गांव में हुआ और 12 जुलाई, 2012 को बम्बई में उनका देहान्त हुआ।

चौधरी बंशी लाल एक महान शख्सियत

(26 अगस्त 1927 से 28 मार्च 2006)

– बी.एस. गिल
सचिव, जाट सभा

चौधरी बंसीलाल एक भारतीय स्वतंत्रता सेनानी, वरिष्ठ कांग्रेसी नेता, हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री रहे। उनका जन्म 26 अगस्त 1927हरियाणा के भिवानी जिले के गोलागढ़ गांव के जाट परिवार में हुआ था। उन्होंने 4 अलग–अलग अवधियों 1968–72, 1972–75, 1986–87 एवं 1996–99 तक हरियाणा के मुख्यमंत्री के रूप में कार्य किया। बंसीलाल को 1975 में आपातकाल के दौरान पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी और उनके पुत्र संजय गांधी का एक करीबी विश्वासपात्र माना जाता था। उन्होंने दिसंबर 1975 से मार्च 1977 तक रक्षा मंत्री के रूप में अपनी सेवाएं दी एवं 1975 में केंद्र सरकार में बिना विभाग के मंत्री के रूप में उनका एक संक्षिप्त कार्यकाल रहा। उन्होंने रेलवे और परिवहन विभागों का भी संचालन किया। लगातार सात बार राज्य विधानसभा के लिए चुने गए, पहली बार 1967 में, उन्होंने 1996 में भारतीय

राष्ट्रीय कांग्रेस से अलग होकर हरियाणा विकास पार्टी की स्थापना की। बंशीलाल हरियाणा के एक विकास पुरुष माने जाते है, और अच्छे प्रशासक व्यक्तित्व के लिए भी जाने जाते है।

शिक्षा :–

बंसीलाल ने स्कूल व कॉलेज की पढ़ाई के बाद एल. एल.बी का पंजाब यूनिवर्सिटी लॉ कॉलेज, जालंधर में अध्ययन किया। 1972 में, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय और हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय ने उन्हें क्रमशः विधिशास्त्र एवं विज्ञान की मानद उपाधि से विभूषित किया।

राजनीतिक जीवन :–

1. एक स्वतंत्रता सेनानी के रूप में, वे 1943 से 1944 तक लोहारू राज्य में परजा मंडल के सचिव थे।

2. बंसी लाल 1957 से 1958 तक– बार एसोसिएशन भिवानी के अध्यक्ष थे। वह 1959 से 1962 तक जिला कांग्रेस कमेटी हिसार के अध्यक्ष थे और बाद में वे कांग्रेस कार्यकारिणी समिति तथा कांग्रेस संसदीय बोर्ड के सदस्य बने।

3. वे 1958 से 1962 के बीच पंजाब प्रदेश कांग्रेस समिति के सदस्य थे।

4. वे 1967 से लगातार 7 बार विधान सभा में चुने गए।

5. वे 21 दिसंबर 1975 से 24 मार्च 1977 तक केंद्रीय रक्षा मंत्री रहे।

6. वे 1980–82 के बीच संसदीय समिति और सरकारी उपक्रम समिति के सदस्य रहे।

7. 1982–84 के बीच प्राक्कलन समिति के भी अध्यक्ष थे।

8. 31 दिसम्बर 1984 को वे रेल मंत्री और बाद में परिवहन मंत्री बने।

9. दिसंबर 1975 से 20 दिसंबर 1975 तक केंद्र सरकार में बिना विभाग के मंत्री थे।

10. वे सात बार 1967, 1968, 1972, 1986, 1991, 1996, 2000 में हरियाणा विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुए।

11. वह दो बार 1960 से 2006 और 1976 से 1980 तक राज्य सभा के सदस्य थे। वे तीन बार 1980 से 1984, 1985 से 1986 और 1989 से 1991 तक लोक सभा के सदस्य थे।

12. 1996 में कांग्रेस से अलग होने के बाद, बंसीलाल ने हरियाणा विकास पार्टी की स्थापना की एवं शराबबंदी के उनके अभियान ने उन्हें उसी वर्ष विधान सभा चुनाव में सत्ता में स्थापित कर दिया।

हरियाणा के मुख्यमंत्री के रूप में कार्यकाल :–

बंसीलाल 1968, 1972 1986 और 1996 में में चार बार हरियाणा के मुख्यमंत्री बने। वे भगवत दयाल शर्मा एवं राव बीरेंद्र सिंह के बाद हरियाणा के तीसरे मुख्यमंत्री थे। वे 31 मई 1968 को पहली बार हरियाणा के मुख्यमंत्री बने और उस पद पर 13 मार्च 1972 तक बने रहे। 14 मार्च 1972 को, उन्होंने दूसरी बार राज्य में शीर्ष पद धारण लिया और 30 नवम्बर 1975 तक पद पर बने रहे। उन्हें 5 जून 1986 से 19 जून 1987 तक एवं 11 मई 1996 से 23 जुलाई 1999 तक तीसरी और चौथी बार मुख्यमंत्री नियुक्त किया गया।

बंसीलाल राज्य विधानसभा के लिए सात बार चुने गए, पहली बार 1967 में कुछ समय के लिए चुने गए। 1966 में हरियाणा के गठन के बाद राज्य का अधिकांश औद्योगिक और कृषि विकास, विशेष रूप से बुनियादी ढांचे का निर्माण बंसीलाल की अगुआई के कारण ही हुआ। साठ के दशक के अंत में और सत्तर के दशक में मुख्यमंत्री के रूप में अपने कार्यकाल के दौरान वे हरियाणा में सभी गांवों में बिजलीकरण के लिए जिम्मेदार थे। वे राज्य में राजमार्ग पर्यटन के अग्रदूत थे – यह वह मॉडल था जिसे बाद में कई राज्यों के द्वारा अपनाया गया। कई लोगों द्वारा उन्हें एक 'लौह पुरुष' माना जाता है जो हमेशा वास्तविकता के करीब थे और जिन्होंने समुदाय के उत्थान में गहरी दिलचस्पी ली।

बंसीलाल ने 2005 में विधानसभा चुनावों में भाग नहीं लिया लेकिन उनके पुत्र सुरेंद्र सिंह एवं रणवीर सिंह महेंद्र राज्य विधानसभा के लिए निर्वाचित हुए. सुरेन्द्र सिंह की 2005 में उत्तर प्रदेश में सहारनपुर के पास एक हेलीकाप्टर दुर्घटना में मृत्यु हो गई।

आपात स्थिति में भूमिका :–

जब तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के द्वारा 1975 में आपातकाल लगाया गया तो बंसीलाल सुर्खियों में आए। वे 1975 में आपातकाल के विवादास्पद दिनों में इंदिरा गांधी और उनके पुत्र संजय गांधी के एक करीबी विश्वासपात्र थे। संजय गांधी के साथ उन्हें आपातकाल के दौरान विभिन्न कदमों के लिए जिम्मेदार कहा जाता था।

वे 21 दिसम्बर 1975 से 24 मार्च 1977 तक रक्षा मंत्री और 1 दिसम्बर 1975 से 20 दिसम्बर 1975 तक केंद्र सरकार में बिना विभाग के मंत्री रहे।

दूर–दूर तक यात्रा करने वाले व्यक्तिबंसीलाल ने म्यानमार, अफगानिस्तान, पूर्व सोवियत संघ, मॉरिशस, तंजानिया, जाम्बिया, सेशेल्स, यूनाइटेड किंगडम, कुवैत, ग्रीस, पश्चिम जर्मनी, नीदरलैंड, बेल्जियम, फ्रांस एवं इटली सहित कई देशों की यात्रा की।

मृत्यु :–

बंसीलाल की 28 मार्च 2006 को नई दिल्ली में मृत्यु हो गई। वे कुछ समय से बीमार थे।

राजनीतिक विरासत :–

उनके छोटे बेटे सुरेंद्र सिंह जिनकी 2005 में एक विमान हादसे में मृत्यु हो गई थी पत्नी किरण चौधरी उनकी परम्परागत सीट तोशाम से 2006 के उपचुनाव व 2009 के आम चुनाव में विजयी हो हरियाणा की कांग्रेस सरकार में कैबिनेट मंत्री बनी। किरण चौधरी 2014 में विजयी हो हरियाणा प्रतिपक्ष की नेता बनी व 2019 के आम चुनाव में भी इसी सीट से कांग्रेस की विधायक है। चौ बंसीलाल की पौत्री व सुरेंद्रसिंह व किरण की पुत्री स्वाति चौधरी2009 के लोकसभा चुनाव में भिवानी – महेंद्रगढ़ लोकसभा सीट से कांग्रेस पार्टी की सांसद निर्वाचित हुई थी।

चौधरी बंसी लाल के बड़े बेटे चौधरी रणबीर सिंह महेंद्र, मुंढाल निर्वाचन क्षेत्र से विधान सभा (2005) सदस्य रहे है। चौधरी रणबीर सिंह बीसीसीआई (**BCCI**) के एक एक पूर्व अध्यक्ष भी हैं एवं चौधरी बंसीलाल के ज्येष्ठ पुत्र होने के नाते, उन्हें स्वाभाविक रूप से चौधरी बंसीलाल की राजनीतिक विरासत के अग्रदूत के रूप में देखा जाता है।

महाराजा अनंगपाल तोमर (दिल्ली के संस्थापक)

–लक्ष्मण सिंह फौगाट

महाराजा अगनपाल तोमर पाण्डव पुत्र अर्जुन के पुत्र के पुत्र अभिमन्यु के पुत्र परीक्षित के वंशज थे। जिन्हें दिल्ली के संस्थापक के रूप में अनंगपाल तोमर के नाम से जाना जाता है, महाराजा अनंगपाल तोमर, तोमर वंश के शासक थे। 11वीं शताब्दी में दिल्ली की स्थापना करने और उसे बसाने के लिए जाना जाता है। उनके शासनकाल में तोमर साम्राज्य अपने चरम पर पहुंच गया था।

तोमरों द्वारा शासित क्षेत्र को हरियाणा (शाब्दिक रूप से – भगवान का निवास) कहा जाता था। यह हरियाणा की वर्तमान स्थिति की तुलना के आकार में कई गुना बड़ा था हरियाणा में अनंगपात तोमर के शासनकाल के दौरान तोमर साम्राज्य दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश और राजस्थान के विभिन्न हिस्सों में फैला हुआ था।

तोमर की राजधानी उत्तर भारत में 457 वर्षों तक शासन करने के दौरान कई बार बदली। तोमर साम्राज्य की पहली राजधानी अनंगपुर थी जबकि आखिरी दिल्ली थी।

राजनीतिक महत्त्व से राज्य के अन्य भाग इस प्रकार थे :– पठानकोट– नूरपुर, पाटन– तंवरावती, नगरकोट (कांगड़ा), असीगढ़ (हांसी), स्थानेश्वर (थानेसर), सौंख (मथुरा), तारागढ़, गोपाचल (ग्वालियर), तंवरहिंडा (भटिंडा), तंवरघर

दिल्ली की स्थापना :–

अनंगपाल तोमर ने 1052 में दिल्ली की स्थापना की। दिल्ली संग्रहालय में एक वीएस 1383 शिलालेख तोमर द्वारा दिल्ली स्थापित की स्थापना के बारे में बताता है।हरियाणा नामक देश में, जो पृथ्वी पर स्वर्ग के समान है, तोमर ने ढिल्लिका नामक नगर का निर्माण किया था। लोहे के खंभे पर एक शिलालेख में दिल्ली के संस्थापक का नाम अनंगपाल तोमर है। अलेक्जेंडर कनिंघम नेशिलालेख को इस प्रकार पढ़ाः–

'संवत दिहाली 1109 अंग पल बही'संवत 1109 (1052 सीई) में अनंगपाल तोमर ने दिल्ली की स्थापना की।

दिल्ली नाम की उत्पति 'ढिल्लिका' शब्द से हुई है। अपभ्रंश लेखक विबुद्ध श्रीधर (वीएस 1189–1220) के पसनाहा चारु भी दिल्ली के लिए ढिल्ली नाम की उत्पत्ति की किंवदंती का पहला संदर्भ प्रस्तुत करते हैं।

हरियाणा देश में अनगिनत गाँव है। वहां के ग्रामीण काफी मेहनत करते हैं। ये दूसरों का आधिपत्य स्वीकार नहीं करते और अपने शत्रुओं का रक्त प्रवाहित करने में माहिर होते हैं। इंद्र स्वयं इस देश की प्रशंसा करते हैं। इस देश की राजधानी दिल्ली है।

पृथ्वीराज रासो में भी तोमर द्वारा स्थापित और ढीले नाखून की कथा है :–

अनंगपाल ने दिल्ली में "किल्ली"(कील) की स्थापना की। इस कहानी को इतिहास से कभी भी हटाया नहीं जा सकता है।अनंगपाल का साम्राज्य कई राज्यों से घिरा हुआ था लेकिन उनमें से केवल दो के साथ संघर्ष के रिकॉर्ड उपलब्ध है। अपने समकालीन श्रीधर के पार्श्वनाथ पारित के अनुसार उन्होंने हिमाचल प्रदेश में इब्राहिम गजनवी के नेतृत्व में तुर्कों को हराया और उसके बाद कश्मीर में उत्पल वंश के कुलदेव को हराया।

माना जाता है कि लाल कोट (जैसा कि किला राय पिथौरा को मूल रूप से कहा जाता था) का निर्माण महाराजा अनंगपाल तोमर के शासनकाल में किया गया था। वह लोहे के खंबे (लोहे के स्तम्भ) को सौंख (मथुरा) नामक स्थान मथुरा से लाया और इसे दिल्ली में वर्ष 1052 में स्थापित कर दिया, जैसा कि उस पर शिलालेखों से स्पष्ट है। दिल्ली में लौह स्तंभ (किल्ली) को स्थापित करने के बाद "श्री किल्ली देव पाल" के नाम के सिक्के भी उसके द्वारा ढाले गए थे। लोहे के स्तंभ को केंद्र मानकर अनेक महलों और मंदिरों का निर्माण किया गया और अंत में उनके चारों और लालकोट का किला बनाया गया। लाल कोट का निर्माण वर्ष 1060 में पूरा हुआ। किले की परिधि 2 मील से अधिक थी और किले की दीवारे 60 फीट लंबी और 30 फीट मोटी थी।लाल कोट दिल्ली का असली लाल किला था। जिसे आज हम लाल किला या लाल किला कहते हैं, उसे मूल रूप से किला–ए–मुबारक कहा जाता था। ऐसा माना जाता है कि हांसी की स्थापना अनंगपाल ने अपने गुरु 'हंसकर' के लिए की थी। बाद में उनके पुत्र द्रुपद ने हालांकि किले में तलवार बनाने का कारखाना स्थापित किया, इसलिए इसे 'असीगढ़' भी कहा जाता है। इस किले से तलवारे जितनी दूर अरब देशों में निर्यात की जाती थीं। 1915 में काफी शरीफ हुसैन द्वारा तालीफ–ए–तजकारा–ए–हांसी के अनुसार, पूरे क्षेत्र में लगभग 80 मिलों से इस केंद्र को 'हांसीगढ़'का नाम दिया गया था।

उन्होंने राजस्थान के करौली जिले में तहनगढ़ किले (त्रिभुवनगिरी) का निर्माण किया और इसे 'त्रिभुवन पाल नरेश' भी कहा जाता है। उन्हें राजस्थान में अपने तंवरावती साम्राज्य की राजधानी के रूप में पाटन किले की स्थापना करने का भी श्रेय दिया जाता है। इनके अलावा, उन्होंने बल्लभगढ़, मथुरा, बादलगढ़ और महेंद्रगढ़ (नारनौल) के किलों का भी निर्माण किया।

योगमाया मंदिर का निर्माण अनंगपाल तोमर ने तोमरों की कुलदेवी योगमाया की पूजा के लिए करवाया था। मंदिर तौह स्तंभ से 260 गज की दूरी पर और महरोली में लाल कोट किले की दीवारों के भीतर स्थित है। उन्होंने मंदिर के बगल में एक जल निकाय (जोहड़) भी बनाया, जिसे अनंगताल बावड़ी के नाम से जाना जाता है। यह उन 27 मंदिरों में से एक है जिन्हें मुस्लमानों द्वारा नष्ट कर दिया गया था और यह पूर्व सल्तनत काल से संबंधित एकमात्र सुरक्षित रहा हुआ मंदिर है जो अभी भी उपयोग में है। राजा हेमू ने मंदिर का पुनर्निर्माण कराया और मंदिर को खंडहर से नया बनवाया। स्थानीय पुजारियों और स्थानीय अभिलेखों के अनुसार, माना जाता है कि मूल मंदिर महाभारत युद्ध के अंत में पांडवों द्वारा बनाया गया था। 12वीं सदी के जैन धर्मग्रंथों में भी मंदिर के बाद महरौली का उल्लेख योगिनीपुरा के रूप में किया गया है। यह मंदिर दिल्ली के एक महत्वपूर्ण अंतर–धार्मिक उत्सव, वार्षिक फूल वालों की सैर का भी एकअभिन्न अंग है।

महरौली में अनंगताल बावड़ी जो दिल्ली में बावड़ी का सबसे पुराना मौजूदारूप है, उनके द्वारा बनाया गया था। उनके एक बेटे सूरजपाल को सूरजकुंड का निर्माण करने का श्रेय दिया जाता है जहां एक वार्षिक मेला (मेला)आयोजित किया जाता है।

अनंगपाल तोमर ने दो प्रकार के पौराणिक छंदों के साथ सिक्कों का निर्माण किया :–

1. श्री अंगपाल –एक शुद्ध संस्कृत संस्करण
2. श्री अनंगपात –एक स्थानीय हरियाणवी बोली संस्करण

इस श्री अंगपाल का प्रयोग अत्यंत महत्वपूर्ण है। मध्यकालीन हिंदी के वास्तविक जनक अनंगपाल द्वितीय है और इसका जन्मस्थान हरियाणा है। तुलसीदास और अमीर खुसरो की भाषाओं का स्रोत यही क्षेत्र था। हिंदी के विकास का श्रेय अमीर खुसरो को दिया जाता है, लेकिन इतिहासकार और पूर्वलेखक शास्त्री हरिहर निवास द्विवेदी के अनुसार, वास्तविकता यह है कि इसे उनसे कई सदियों पहले दिल्ली के तोमरों द्वारा डिजाइन किया गया था और इसका पूर्ण परिशोधन ग्वालियर के तोमर द्वारा किया गया था।

महाराजा अनंगपाल तोमर द्वारा लोहे के स्तंभ के चारों ओर निर्मित प्राचीन मंदिरों के स्तंभ फरिश्ता के अनुसार, उत्तरी भारत में लगभग 150 राज्यों का एक समूह था जिसके शासक दिल्ली के तोमर सम्राटों को अपना प्रमुख मानते थे। माना जाता है कि राजाओं का यह समूह अनंगपाल तोमर के शासनकाल के दौरान भी अस्तित्व में था। इन राज्यों के शासकों ने बाद में ही तोमर सम्राट चहदपाल तोमर (जिन्हें गोविंद राय के नाम से जाना जाता है) के नेतृत्व में तराइन की पहली और दूसरी लड़ाई में भाग लिया, जो पृथ्वीराज चौहान के चचेरे भाई और सेनापति थे।

18वीं शताब्दी के एक प्राचीन विद्वान ने लिखा है कि अनंगपाल तोमर 'हिंदुस्तान के सर्वोच्च संप्रभु कहे जाने के उचित हकदार थे।'

उनकी स्तुति में एक शिलालेख इस प्रकार है :–

शासक अनंगपाल तोमर सर्वत्र प्रसिद्ध है और अपने शत्रुओं की खोपड़ी तोड़ता था। उसने महान शेषनाग (जिस परपृथ्वी स्थिर है) को भी हिला दिया था।

भारत सरकार ने हाल ही में 11वीं सदी के तोमर सम्राट अनंगपाल तोमर की विरासत को लोकप्रिय बनाने के लिए 'महाराजा अनंगपाल द्वितीय स्मारक समिति' का गठन किया है। इसके प्रस्तावों में दिल्ली हवाई अड्डे पर अनंगपाल तोमर की मूर्ति का निर्माण और दिल्ली में उनकी विरासत को समर्पित एक संग्रालय का निर्माण करना शामिल है। एक प्रदर्शनी –जिसमें सिक्के, शिलालेख और साहित्य शामिल हैं– संगोष्ठी के मौके पर आयोजित भारतीय सांस्.तिक संबंध परिषद (आईसीसीआर) के माध्यम से विदेशों में ले जाया जाएगा ताकि कला भारत के बाहर भी जड़ें जमा सके।लाल कोट को एएसआई संरक्षित स्मारक बनाने का भी प्रस्ताव है ताकि तोमर और दिल्ली के बीच और अधिक संपर्क स्थापित करने के लिए ऊर्ध्वाधर खुदाई की जा सके। 'अनंगपाल तोमर ने इंद्रप्रस्थ को आबाद करने और इसे इसका वर्तमान नाम दिल्ली देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। 11वीं शताब्दी में जब वह सिंहासन पर बैठा तो यह क्षेत्र खंडर के रूप में था, उसने ही लाल कोट किला और अनंगपाल बावड़ी का निर्माण किया था। इस क्षेत्र पर तोमर शासन कई शिलालेखों और सिक्कों से प्रमाणित है, और उनके वंश का पता पांडवों (महाभारत के) से लगाया जा सकता है, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) के पूर्व संयुक्त महानिदेशक बीआर मणि ने कहा कि तोमर वंश पांडवों के ही वंशज हैं।

भारतेन्दु महाराजा जवाहर सिंह

– रविन्द्र

भरतपुर राज्य के महाराजा। भारतेन्दु महाराजा जवाहर सिंह, (1728 ईस्वी–1763 ईस्वी) शासन काल – (1763–1768)

भरतपुर राज्य के भारतेन्दु महाराजा जवाहर सिंह :–

महाराजा जवाहर सिंह का शासन काल सन् 1763 से सन 1768 तक रहा था।महाराजा जवाहर सिंह महाराजा सूरजमल के प्रतापी ज्येष्ठ पुत्र थे। वह अपने बाबा/दादा की तरह वीर, साहसी और प्रतापी राजा थे।

महाराज सूरजमल की जिस समय मृत्यु हुई थी, उस समय भरतपुर राज्य का विस्तार और वैभव इस प्रकार था – आगरा, धौलपुर, मैनपुरी, हाथरस, अलीगढ़, एटा, मेरठ, रोहतक, फर्रुखनगर, मेवात, रेवाड़ी, गुड़गांव और मथुरा के जिले उनके अधिकार में थे। गंगाजी का दाहिना किनारा इस राज्य की पूर्वी सरहद, चम्बल दक्षिणी, जयपुर का राज्य पश्चिमी और देहली का सूबा उत्तरी सरहद थे। इसकी लम्बाई पूर्व से पश्चिम की ओर 200 मील और उत्तर से दक्षिण की ओर 150 मील के करीब थी।

खजाने और माल के विषय में जो कि सूरजमल ने अपने उत्तराधिकारी के लिए छोड़ा, भिन्न–भिन्न मत हैं। कुछ इसे नौ करोड़ बताते हैं और कुछ कम। जैसा कि मुझे मालूम हुआ है उसका खर्च 65 लाख से अधिक और 60 लाख सलाना से कम नहीं था और राज्य के अन्तिम 5–6 वर्षो में उसकी वार्षिक मालगुजारी एक करोड़ पचैहत्तर लाख से कम नहीं थी। उसने अपने पूर्वजों के खजाने में 5–6 करोड़ रुपया जमा कर दिया। जवाहरसिंह के गद्दी पर बैठने के समय 10 करोड़ रुपया जाटों के खजाने में था। बहुत–सा गढ़ा हुआ न जाने कहां है। यहां के गुप्त खजाने में अब भी बहुत अमूल्य पदार्थ और देहली, आगरे की लूट की अद्वितीय तथा छंटी हुई चीजें जिनका मिलना अब बहुत मुश्किल है बताई जाती हैं। खजाने के सिवाय सूरजमल ने अपने उत्तराधिकारी के लिए 5000 घोड़े, 60 हाथी, 15,000 सवार, 25000 से अधिक पैदल, 300 से अधिक तोपें और उतनी ही बारूद–खाना तथा अन्य युद्ध का सामान छोड़ा।

पुष्कर स्नान :–

महाराजा जवाहर सिंह अपनी सेना के साथ गाजेबाजो व नगाड़े बजाता हुआ 6 नवम्बर 1767 को पुष्कर अपनी माता किशोरी देवी को स्नान करवाने के लिये पहुंच गया। यहा पर राजपूतो के सिवाय किसी और को स्नान की इजाजत नहीं थी लेकिन किसी भी राजपूत की हिम्मत नहीं हुई की जवाहर सिंह को रोक दे सभी राजपूत दुम दबाकर अपने महलों में घुसकर तमासा देखते रह गये ये जाटों के शीर्ष का उच्चतम शिखर था। जिसको जवाहर सिंह ने ओर ऊंचा कर दिया। महारानी ने सेना सहित पुष्कर में स्थान किया। यहां पर जाटो के नाम से एक घाट और मन्दिर बनवाया और गरीबो को बढ़चढ़ कर दान दिया। इतना दान दिया कि आज तक कोई भी राजपूत या कोई अन्य इतना दान नहीं दे पाया।

राजपूतों की स्त्रियों के अतिरिक्त कोई भी औरत लाख की बनी चूड़ियां नहीं पहन सकती दी और अपने घाघरों व दामन में नाड़े नही डाल सकती थी। केवल गूंज की रस्सी बनाकर ही घाघरे व दामन के ऊपर बांधा करती थी। पुरुषों को सिर पर पगड़ी बाधने की आज्ञा नहीं थी राजपूतों के सामने जाट चारपाई पर नहीं बैठ सकते थे। महाराजा जवाहर सिंह ने आम जनता पर से ये पाबन्दियां हटाने के लिये अजमेर शहर से कई लाखों की मात्रा में लाख की बनी चूड़ियां, नाड़े और पगडियां आदि खरीद कर पुष्कर में स्नान

करके सभी स्त्री व पुरुषों में मुत बांट दी। लाखें औरतों को नावे डलवाये, मुड़िया पहनाई तथा लाखो लोगो को पगड़ियां बन्धवाई। कहते है महाराजा ने लाख की चूड़ियां बेचने वाले व्यापारी से पूछा तो उसने उत्तर दिया कि महाराज ये आपके काम की नहीं, ये तो लाख की है। महाराज ने मूल्य समझकर 1 लाख रुपये उसको देकर वे सारी चूडिया ही खरीद ली और सभी औरतों में बांट दी। आम सभी जनता को पक्के घाटों पर स्नान करने की आज्ञा महाराजा जवाहर सिंह ने दी और उपरोक्त नहाने व रहन–सहन संबंधी गदी प्रथाओं के विरूध घौर निन्दा करके लोगों को राहत दिलवाई। राजपूत इस प्रकरण से अपनी बेईज्जती महसूस करने लगे और इन गंदी प्रथाओं को फिर बढ़वा नहीं दिया। महारानी किशोरी देवी को सोने से तौला गया और महारानी ने ये सोना सभी गरीबों में बांट दिया।

महाराजा जवाहर सिंह के तबेले में 12,000 घोड़े उतने ही चुनीदा सवारों सहित थे जिनको कि उसने दूसरों के घुड़सवारों पर निशाना लगाने का और फिर अपनी बन्दूकें सुरक्षित होकर भरने के लिए चक्कर खाने का अभ्यास कराया था। यह आदमी रोजाना के अभ्यास से इतने निपुण और भयानक निशानेबाज और मार्च में इतने चतुर बन गए थे कि हिन्दुस्तान में कोई भी ऐसी सेना नहीं थी जो खुले मैदान में उनका सामना कर सके और न ऐसे राजा के विरुद्ध लड़ाई मोल लेना ही फायदा के लिए सम्भव समझा जाता था।महाराजा जवाहर सिंह ने अपने पिता की जीवित अवस्था में सैकड़ो युद्धों में विजय प्राप्त की थी। जब महाराजा सूरजमल की मृत्यु धोखे से दिल्ली विजय अभियान में हो गयी तब रानी किशोरी ने जवाहर सिंह को भरतपुर की गद्दी पर बैठा कर अपने पिता की मृत्यु का बदला लेने के लिए दिल्ली पर आक्रमण करने का आदेश दिया दिल्ली लालकिले पर अधिकार करने के लिए उसके भीतर घुसे हुए मुस्लिम सैनिकों को जीतना था। इसके लिए महाराजा ने आक्रमण किया। जवाहरसिंह ने शाहदरा के निकट यमुना तट से तोपों के गोले लालकिले पर बरसाने शुरु कर दिये जिनसे किले एवं शत्रु को काफी हानि पहुंची। दूसरी ओर भरतपुर सेना इस किले के दरवाजों को तोड़कर अन्दर घुसने का प्रयत्न कर रही थी। परन्तु किले के बन्द दरवाजे के किवाड़ों पर लम्बे–लम्बे नोकदार बाहर को उभरे हुए लोहे के मजबूत भाले लगे हुए थे, जो हाथी की टक्कर से टूट सकते थे। किन्तु हाथी इन भालों से डरकर उल्टे हट गये। यह कार्य बिना देरी किये करना था। अतः और साधन न मिलने पर महारानी किशोरी के भाई भात भरने के रूप में पुष्कर सिंह (पाखरिया) पाखरिया वीर योद्धा अपनी छाती किवाड़ों के भालों के साथ लगाकर खड़ा हो गया और पीलवान से कहकर हाथी की टक्कर अपनी कमर पर मरवा ली। दरवाजा तो टूटकर खुल गया परन्तु वीर योद्धा पाखरिया वहीं पर वीरगति को प्राप्त हो गया। लाल किले पर लगे चित्तौड़ दुर्ग से लाये अष्टधातु का दरवाजा भी उखाड़कर भरतपुर ले आए।इस प्रसंग का उल्लेख इतिहासकार दीनानाथ दुबे की पुस्तक "भारत के दुर्ग" तथा डॉ. राघवेन्द्र मनोहर की पुस्तक "राजस्थान के प्रमुख दुर्ग" में भी आता है।

शेर–ए–हिन्द वीर जवाहर सिंह दिल्ली विजय कर भरतपुर महलों में लोटे तो उनसे माँ किशोरी ने पूछा की बेटा दिल्ली विजय से तुम कौनसी अनमोल वस्तु लाये हो तो वीर जवाहर सिंह ने जबाब दिया उन चित्तोड़ कोट के किवाड़ो को लाया हूँ जिनपर वीर मामा पाखरिया ने बलिदान दिया वीर जवाहर से माता किशोरी पूछती है – कुछ सुना बात दिल्ली रण की सौगात वहां से क्या लाया बेटा मेरे वचनों पर ही तूने अत्यन्य कष्ट पाया। उज्ज्वल इतिहास प्रखर चित्तोड़ कोट के माँ किवाड़ लाया हूँ तभी यह उद्घोस अंबर में गूंजा था श्री गोवर्धन गिर्राज की जय जवाहर सिंह की जय वीर शहीद पारवरिया तोमर की जय जाटों के सक्ल समाज की जय रन अजय भरतपुर राज की जय।

कुछ इतिहासकारों के कथन :–

1. दिलीप सिंह अहलावतपाखरिया वीर के बारे में लिखते है – तोमर खूंटेल जाटों में पुष्करसिंह अथवा पाखरिया नाम का एक बड़ा प्रसिद्ध शहीद हुआ है। यह वीर योद्धा महाराजा जवाहरसिंह की दिल्ली विजय में साथ था। यह लालकिले के द्वार की लोहे की सलाखें पकड़कर इसलिए झूल गया था क्योंकी सलाखों की नोकों पर टकराने से हाथी चिंघाड़ मार कर दूर भागते थे। उस वीर मे इस अनुपम बलिदान से ही अन्दर की अर्गला टूट गई और अष्टधाती कपाट खुल गये। देहली विजय में भारी श्रेय इसी वीर को दिया गया है। इस पर भारतवर्ष के खूंटेल तथा जाट जाति आज भी गर्व करती हैं।

2. भरतपुर महाराजा ब्रिजेन्द्र सिंह के दरबार में रचित ब्रिजेन्द्र वंश भास्कर नामक ग्रन्थ में भी दिल्ली के दरवाजो पर बलिदान देने वाले वीर का नाम खुटेल पाखारिया अंकित है राजपरिवार भी पाखारिया खुटेल को भी बलिदानी मानता है।

3. जाटों के जोहर नामक किताब में भी पंडित आचार्य गोपालदास कौशिक जी ने तथा जाटों के नविन इतिहास में उपेन्द्र नाथ शर्मा ने भी दिल्ली विजय पर खुटेल पाखरिया के बलिदान होने की बात लिखी है।

'तेरे बाप की पगड़ी पड़ी बोझड़ों में और तू पग्गड़ बांधे हांडै, जा पूत तुझे उस दिन मानूंगी जिस दिन दिल्ली तोड़ देगा'

यही वह उदगार थे जब महाराजा सूरज सुजान (सूरजमल) को मुगलों व पेशवाओं ने धोखे से मरवाया तो होडल की राजकुमारी व भरतपुर (लोहागढ़) की पटराणी महारानी किशोरी जी के मुख से उदगार हुए थे और उनका बेटा भारतेन्दु जवाहरमल जा चढ़ा था दिल्ली की छाती पर।

आज 7 अगस्त 1768 उनकी पुण्यतिथि है। उनको नमन करते हुए उनके नाम जो कीर्तिमान हैं उनका जिक्र कर लेते हैं :–

1) खिलजी के वक्त से चित्तौड़गढ़ किले के अष्टधातु के दरवाजे जो खिलजी ने वहाँ से उखाड़ लाकर दिल्ली लालकिले में लगवा दिए थे, आप उनको उखाड़ भरतपुर ले गए और आजतक वहां के दिल्ली गेट की शोभा बढ़ा रहे हैं।

2) हार के बाद मुगल बादशाह ने अपनी बेटी से ब्याह का ऑफर दिया परन्तु आपने राजकुमारी, अपने मित्र फ्रेंच कैप्टेन समरू को प्रणवा दी।

3) पानीपत की तीसरी लड़ाई में पुणे के पेशवाओं को हराने वाले अहमदशाह अब्दाली को जब पता लगा कि महाराजा सूरज सुजान का बेटा दिल्ली लालकिला फिर से जीत लिया है तो वह हक्काबक्का रह गया।

4) इस जीत को 'दिल्ली की लूट' व 'जाटों के गदर' के नाम से भी जाना जाता है।

5) महाराजा सूरज सुजान की दिल्ली पर दो जीतों के बाद यह अल्प समय में तीसरी जीत थी, जिसके चलते कहावत चल पड़ी कि 'दिल्ली' तो जाटों की बहु है।

6) महाराणी किशोरी जी खुद इस लड़ाई में साथ आई थी व अपने बेटे का मार्गदर्शन कर रही थी। ना इतनी डेठी वीरांगना कभी देखी ना सुनी ये माइथोलॉजी तक में नहीं।

ऐसे अफलातूनी पुरखों को पुनः पुनः नमन।

पिछले अंक, शेष पेज–15

चौधरी छोटा की जनता पार्टी के गठन का शताब्दी वर्ष 2023

–सूरजभान दहिया

सर सिकंदर को चिंतित देखकर चौधरी छोटू राम थोड़ा सा मुस्कुराते हुए बोले –वजीरे आजम। वे दिन लद गए जब ब्रिटिस अफसर सरकार पर हावी होते थे। जनता की हमारे प्रतिनिष्ठा को न तो गवर्नर कम कर सकता न से वायसराय। यह युद्धकाल है अंग्रेजी हुकुमत तो हमारे पर निर्भर है खा। सामग्री व फौज सिपाही शक्ति हम दे रहे हैं। आपकी जो जनता में जो प्रतिष्ठा है उसे देखने के लिए कभी अवसर ही नहीं निकाला। चलो मैं कॉन्फ्रेंस का आयोजन करता हूं आप उनमें चलकर देखिए। कॉन्फ्रेंस का नाम सुनकर सर सिकंदर कुछ सहमे और दबी जुबान मैं संकोच मुद्रा में बोले खुदा के लिए कॉन्फ्रेंस मत करवाईये, हमारी कॉन्फ्रेंस में उल्लू बोलेंगे –हिंदू सभा और को कांग्रेस वालों ने हमें बहुत बदनाम कर रखा है।" चलो, मैं एक कॉन्फ्रेंस हरियाणा क्षेत्र में करवाता हूं। आपके ख्याल के अनुसार अगर हाजिरी कम हुई तो उसमें आपकी कोई बदनामी नहीं होगी क्योंकि आप कह सकोंगे कि वह हिंदू बाहुल इलाका है और हिंदू इलाके में जाने का उन्हें कभी मौका नहीं मिला। चौधरी छोटू राम ने बड़ेधैर्य व उत्साह से यह प्रस्ताव सर सिकंदर को रखा। प्रधानमंत्री तथा अन्य मंत्रीगण ने चौधरी छोटू राम के प्रस्ताव को सहमति दे दी।

चौधरी छोटू राम ने पहली यूनियनिष्ट पार्टी की सरकार की जनसभा सोनीपत में आयोजित करने की घोषणा कर दी। इस जनसभा के आयोजन की सूचना गांव में बड़ी तेजी से पहुंच गई। लोगों में जनसभा के प्रति नया उल्लास जागृतहो गया। हुक्कों की बैठको मैं मुख्य बातचीत का मुद्दा चौधरी छोटू राम की सोनीपत की रैली का बन गया। हर कोई इस रैली में शामिल होने के लिए तैयारी करने लग गया। सारे हरियाणा में उमंग वजोश था –इस सेसटे दिल्ली सूबे व उत्तर प्रदेश के पश्चिम भाग में भी इतनी ही उत्सुकता देखी। रैली के उद्घोष से गांव गांव में ज्वर सा प्रभावित हो गया था। एक अदम्य उत्साह था कि चौधरी छोटू राम ने बुलाया है।पनघट पर आते–जाते महिलाओं के गीतों ने रैली के लिए वातावरण में नईऊर्जा उत्पन्न कर दी। एक ऐतिहासिक महिला लोकगीत का उल्लेख मिलता है:–

छोटूराम चौधरी की पंचायत का संदेशा, आया री सखी!
गाम गाम में, सोनीपत में बिछेगी खरड़ की सैकड़ों लार में,
छोटूराम ने लड़ा सै जो कुलछत्र लाहौर में, उसकी जीत का
जश्न बनेगा ग्यास ने, चाल्यागे सिंगर–सिंगर के सारी रे
भाण, सिकंदर–छोटूराम के सम्मान में।

नरक कुंड तै काढलिया जमीदार, छोटू राम ने,
ना बानियां की देनदारी ना कोई खूड़ इसका गहणे में,
पवन बहरी सै इस खुशी की रीमां, सारी देहात में,
राज पाठ सै ईब सारा छोटू राम के हाथ में।

ऊपर बड़ा राम,तलै यो छोटा राम,
वंदना करो रे सखी! गाम–गाम में।

रैली के निर्धारित दिन 24 नवंबर 1941 को सोनीपत के आकाश के नीचे एक और आकाश बन गया था– पगड़ियों और चुंदडियों रंग–बिरंगी इंद्र–धनुषनुमा आकाश। सोनीपत रेलवे स्टेशन के पास का रैली स्थल में एक लाख से ऊपर नर–नारियों का हुजूम जमीदार पार्टी के प्रति समर्पण था। इससे 500 गज की दूरी गीता चौंक पर उसी दिन कांग्रेस ने शहरी बनाम देहात माहौल बनाकर रैली आयोजित की थी। जब वजीर–ए–आजम सर सिकंदर हयातखान और चौधरी छोटू राम स्टेज पर पहुंचे तो सोनीपत शहर का आकाश वजीर आजम राम जिंदाबाद, किसान मसीहा जिंदाबाद,जमींदारा पार्टी जिंदाबाद के नारों से लगातार गूंजता रहा।जिसकी आवाज नई दिल्ली के वायसराय हाउस तक सुनाई दी। कांग्रेस की रैली कुछ ही समय में उखड़ गई और लोग जमीरादारा पार्टी की रैली में आ पहुंचे।जमीरादारा पार्टी में लोगों की आस्था तथा इतनी भारी भीड़ को देकर वजीर ए आजम सर सिकंदर और उनके मंत्री साथी प्रसन्नमुद्रा में अति प्रभावित नजर आ रहे थे।

जब चौधरी छोटू राम अपार जन समूह को संबोधित करने लगे तो फिर से चौधरी छोटू राम जिंदाबाद के नारे ने सारा आकाश गूंज उठा। किसान मसीहा चौधरी छोटू राम ने लोगों का विनम्र भाव से अभिनंदन स्वीकारा और कहा "पंजाब में यूनियनिस्ट पार्टी की सरकार ने जिसे आप भाई जमीदारा पार्टी सरकार का सम्मान देते हैं, लघु काल में ही जो नीतियां आपकी भलाई के लिए लागू की है, आप उससे संतुष्ट नजर दिखाई दे रहे हैं।निःसन्देह यह किसानों की सरकार है, पिछड़ो की सरकार है, उपेक्षित वर्ग की सरकार है, शोषित वर्ग की सरकार है। अतः आपको गर्व होना चाहिए कि पंजाब में तुम्हारी सरकार है, इसे तुमने ही बनाया है और तुम्हारे हित के प्रतिबद्ध है। इसे तुमसे तुम्हारे भाई ही चला रहे हैं। इस सरकार ने तुम्हारे कष्ट निवारण के लिए थोड़े समय में जो कानून बनाए हैं तथा तुम्हे उन कानूनों ने जो राहत दिलवाई है, उससे कुछ विरोधी पार्टियों ने हमारे मंत्रिमंडल के खिलाफ आवश्यक प्रस्ताव लाया पर वह गिर गया, गिरना ही था क्योंकि यूनियनिस्ट पार्टी के सभी विधायक ग्रामीण उत्थान के लिए समर्पित है। हम कुछ और विकास योजनाएं ला रहे हैं ताकि देहात में भी वही सुविधाएं मिले जो आज सिर्फ शहरों तक सीमित रही है।

इसके पश्चात स्टेज पर वजीर ए आजम सर सिकंदर हयात खां आये, करतल ध्वनि से फिर उनका स्वागत हुआ। उन्होंने संबोधन करने से पहले चौधरी छोटू राम की ओर देखा और अपने भावना व्यक्त करते हुए कहा हरियाणा क्षेत्र की पाकजमी पर मैं चौधरी छोटू राम के आशीर्वाद से पंजाब के वजीर ए आजम की हैसियत से आपके सामने खड़ा हूं और आपके प्यार को मैं शब्दों में बयान नहीं कर पा रहा हूं। देखेंगे और कानूनी रुप से मैं पंजाब का बड़ा मंत्री हूं किंतु वास्तव में सारे मंत्रिमंडल की ताकत तो चौधरी छोटू में है। इस बात को उनके विरोधी भी खूब जानते थे। हमारी जमीदारा सरकार ने पंजाब में आर्थिक गुलामी के जुए को उतार कर फेंक दिया है। चौधरी छोटू राम जो मसला हाथ में ले लेते हैं, उसको पूरा करके ही दम लेते है।उन्होंनेपंजाब में वेनीतियां लागू की है जिससे उपेक्षित बड़ीआबादी को उसका वाजिब हक मिला है। आज इस जनसभा से मुझे जो हौंसला मिला है उसे यह सरकार और क्रांतिकारी कार्यक्रम लागू करने के लिए वचनबद्ध हो गई है।

इस कॉफ्रेंस के बाद सर सिकंदर का जो आत्मविश्वास डगमगा गया था, वह गायब हो गया और उन्हें विश्वास हो गया कि चौधरी छोटूराम को हरियाणा क्षेत्र में ही नहीं बल्कि सारे पंजाब में व्यापक समर्थन प्राप्त है। चौधरी छोटू राम देहात पंजाब के बेताज बादशाह हैं, सिरमोर हैं।इस रैली में यूरोप के कई देशों से तथा अमरीका से प्रेस रिपोर्टर पहुंचे थे जिन्होंने लिखा कि पंजाब की असली ताकत यूनियनिष्ट पार्टी है अर्थात चौधरी छोटू राम ही पंजाब की सबसे प्रभावी एवं लोकप्रिय बड़ी शख्सियत है।

रैली से संबंधी रोहट गांव का एक किसान मशहूर है। वहां एक बड़ी–बूढ़ी जिसने रैली में हिस्सा लिया था, किसी ने पूछ लिया दादी! चौधरी छोटू राम को देखा, वह तो ताऊ ज्ञानी जिसा छोटा सा था। दादी ने तपाक से टोका –"छोरे, राम छोटा–बड़ा नहीं होता, राम तै राम ही होव्वै सै। ऊपर वाले राम के दर्शन तै होगे या नहीं पर धरती आले छोटा राम के तै दर्शन होंगे। मैं तै गंगा जी नहाली। अर और सुन, यो साल में बाजरा जो पड़ा सै, इसे कतई का सिब्बन बाण्या ले जाता। म्हारे छोटे राम छोटू राम ने बाणिया पेनैकेल डाल दी, ईब म्हारी जिन्नस पर बुरी नजर राखण की हिम्मत उसकी कोन्या। बाणियां ने तै ईब तै पहैला म्हारे पै कर्जा लाद राख्या था। सारा चौधरी छोटूराम ने खत्म कर दिया, अर म्हारी नरक की जिन्दगी स्वर्ग बणा दी। बाणिया की बही के कागज पर दूकानदार ईब अचार रखकर बेचते मैने देखे सैं। ऊपर आला राम म्हारे छोटे राम की ऊमर बढावै।"

जमीदारा पार्टी की सरकार की बढ़ती लोकप्रियता से पंजाब में अन्य राजनीतिक पार्टियों को भविष्य पर प्रश्न चिन्ह लगते जा रहे थे। ज्यादा पीड़ा तो मुस्लिम लींग की बढ़ती जा रही थी।मुस्लिमलींग के सुप्रीमो जिंनाह तो बड़े व्यथित थे कि कैसे मुसलमानों पर चौधरी छोटू राम की पकड़ इतने मजबूत है ? अतएव जिन्नाह वे सभी हथकंडे अपना रहे थे कि मुसलमान यूनियनिस्ट पार्टी से हटकर मुस्लिमलींग के अनुयाई बनें। एक बार जिन्नाह ने यूनियनिस्ट पार्टी के विधायक से मुलाकात की तथा उन्हें संबोधित करते हुए कहा "आप इस्लाम धर्म के पाबंदे

हैं, कैसे आपने अपना ईमान–धर्म हिंदू नेता चौधरी छोटू राम को गिरवी रख दिया है आप अल्लाह के सम्मुख माफी के हकदार नहीं रहेंगे? अतः अपने आपको पाक बनाओ और मुस्लिमलींग में आ जाओ।" यह तकरीर सुनकर एक जमींदारा पार्टी के विधायक ने जिन्नाहसे प्रश्न कर डाला "जनाब आप यहबताए कि इस्लाम पहले आया या जाट कोम।" जिन्नाह का जवाब था "बेशक जाट का वजूद पहले से था इस्लाम बाद में आया" तो फिर विधायक ने जिन्नाह को कह दिया "हम जाट हैं, चौधरी छोटू राम जाट हैं, हमारा उनसे बहुत पुराना खून का रिश्ता है मजहब के नाम पर हम अपना भाईचारा थोड़ा छोड़ेंगे। चौधरी छोटू रामही हमारे रहनुमा बने रहेंगे।" यह सुनकर जिन्नाह मौन रहकर फिर भी वे पंजाब में धर्म का उन्माद फैलाने की हरकत से बाज नहीं आए। जिन्नाह की फिरका परस्ती की हरकतों को देकर चौधरी छोटू राम ने जिन्नाह को अल्टीमेट दे दिया–"आप 24 घंटे के अंदर पंजाब छोड़ दे।"जिन्नाह को चौधरी छोटूराम की क्षमता का परिचय था अतः व तुरंत पंजाब से भागकर वह मुंबई चले गए। वहां उन्होने ने मुस्लिमलींग के लोगों को कहा "जब तक पंजाब में छोटू राम है वहां मुस्लिमलींग का वजूद कायम नहीं हो सकता।

कांग्रेस तथा अन्य हिंदु संगठनो ने भी चौधरी छोटू राम पर धर्म के नाम पर तीखे प्रहार किए। किसी ने उसे छोटू खान कहा तो किसी ने उसे गैर हिन्दु बोला परंतु वे किसानों के हित कर कार्यक्रमों को लागू करते रहे। प्रगतिवादी विचारधारा के व्यक्तित्व चौधरी छोटू राम के विरुद्ध हिंदू सभा तथा अन्य संगठनोने सुबह–सुबह प्रभात फेरीयां भी निकालनी प्रारम्भ कर दी और इन फेरियो में विष पूर्ण शब्दों का उच्चारण होने लगा। "ओ केहडी माई। जिसनूं जम्मां छोटूराम कसाई" चौधरी छोटूराम इन दुश्प्रचारो से अविचलित अपनी जमीदारा पार्टी के एजैण्डे को आगे बढ़ाते रहे।

चारों ओर से जमीदार पार्टी की सरकार को घेरने के लिए भिन्न–2 हथकंडे अपनायेजा रहे थे इसलिए इस पार्टी ने पुनः जनता का विश्वास आकंलन हेतू एक और रैली 1 मार्च 1942 को जाट हाई स्कूल रोहतक के ग्राउंड में आयोजित की। इसे हिरक जंयती समारोह की संज्ञा दी गई। चौधरी राम की 61वी जयंती समारोह था। इस समारोह में दो लाख लोगों ने भाग लिया तथा प्रधानमंत्री सर सिकंदर हयात खान ने जनता की और 61 हजारों रुपये राशि उपहार चौधरी साहब को दिया। इस अवसर पर प्रधानमंत्री ने इस अपार भीड़ को संबोधित करते हुए कहा था –

"60 साल पहले हरियाणा की वीर वसुंधरा पर एक जाट परिवार में एक ऐसी अद्वितीय शक्ति आई जिसने किसान को नरक कुंड से निकालकर स्वर्गीय जीवन उपहार दिया था। ये शक्ति है चौधरी छोटू राम एक अद्वितीय आत्मा जो दशको के बाद नवयुग तथा नवजीवन आरम्भ करने हेतु इस धरती पर अवतरित होती है।धन्य है वह पावन धरा जिसने एक कुशाग्र सपूत को जन्मा। जो चौधरी छोटू राम ने शोषित समाज की खुशहाली के लिए इतने लघु काल में कार्य कर दिए, आने वाली सदियों तक पंजाब को किसी अन्य नेता की जरूरत नहीं पड़ेगी। उनकी किसान के प्रति सेवा एक ऐतिहासिक दस्तावेज के रूप में बनकर भविष्य में किसान संपन्नता हेतु प्रेरक बनी रहेगी। मैं इस महान वसुंधरा के जिन्हें इसे भूतपूर्व विभूति को जन्म दिया को सलाम करता हूं तथा महान छोटू राम व्यक्तित्व के सम्मुख नतमस्तक होता हूं।"

इस अवसर पर चौधरी छोटू रामने कहा "मैंने यूनियनिष्ठ पार्टी तथा इस पार्टी की पंजाब में सरकार की उपलब्धियों में अपनी आहूति जरुर डाली है, पर यह सब होने में सबसे बड़ा योगदान तो आपका है जो इस पार्टी की विचारधारा के साथ आप चट्टान की भांति अडिग रहे। मैं जिस वातावरण में जन्मा, पला, बडा हुआ, वहां मैंने उपेक्षा, शोषण, तिरस्कार, गरीबी व पीड़ा के सिवा कुछ नहीं देखा। इससे मेरी जो मानसिक वेदना बड़ी, उससे मुझे एक आत्मबल मिला और मैंने दृढ सकंल्प लिया कि "देहात ने गरीबी, गुरब्बवत की फिजा को मैंने बदलना है।" हमारी पंजाब में सरकार बनी और कुछ वर्षों में हमने किसान, दबे कुचले को शोषण से मुक्ति दिला दी है। भारत में सभी किसान जातियों का जो शोषण हो रहा है, उसका मुख्य कारण अज्ञानता तथा धर्मान्ध है।मैं आपसे पुनः अपील करता हूं कि आप अपने नियति के खुद निर्माता बने, अपने कौम का नेतृत्व दूसरों के हाथों में न दें। कांग्रेस मुस्लिम जैसी पार्टियों में किसान हित किसान खुशहाली की समर्पणता नहीं है। लोकतंत्र तो अनगिनत की वयवस्था है, जब किसान जाति बहुमत में है तो राज भी इन्हीं का होगा। यूनियनिष्ठ पार्टी ने पंजाब में यही पाया है इसलिए पंजाब में आपकी सभी स्कीम लागू हैं। आपको सम्मान, सहायता आत्मविश्वास व उत्थान, निर्भरता यूनियनिष्ठ पार्टी ने दी है"। आप अपने विरोधियों शक्तियों से सावधान रहें वरना फिर आप शोषण काल में चले जाओगे। मैं यह आपको विश्वास दिलाता हूं कि यूनियनिष्ठ पार्टी आपकी खुशहाली के लिए ही काम करती रहेगी।

चौधरी छोटू राम एवं जमीदारा पार्टी की पंजाब सरकार को सबसे बड़ी चुनौती जिन्नाह के उत्पन्न कर दी थी, वह थी देश का बंटवारा। देश के विभाजन का तात्पर्य पंजाब के किसान शक्ति का विच्छेद था। कांग्रेस पार्टी जिन्नाह की अलगाववादी नीति के सामने असहाय हो चली थी परंतु जिन्नाहयूनियनिष्ठ पार्टी के सामने पंजाब में बेबस थे, वह मुस्लिम किसानों में चौधरी छोटूराम के प्रभाव को कम करने में नाकामयाब भी थे। कुछ शहरी मुस्लिम ही यहां मुस्लिमलींग के साथ जुड़े थे। जिन्नाह अंग्रेजीहुकूमत के सहारे जमीदारा पार्टी

को कमजोर करने में आमादा थे। वह कायदे आजम बनकर पंजाब में बार–बार अपने पैर जमाने के लिए आतुर थे।

कायदे आजाम जिनह के नापाक इरादों को विराम लगाने तो चौधरी छोटूराम ने एक जनसभा 9 अप्रैल 1944 को लायलपुर में आयोजित की और वे वहां भारी भीड़ के सामने काफी समय तक बोले। अपनी तकरीर करने से पहले उन्हें अखिल भारतीय वर्षीय जाट सभा द्वारा "रहबरेआजम" की उपाधि से सम्मानित किया गया। फिर उन्होंने अपना संबोधन शुरू किया–

"यहां पर मैं जो आपसे रूबरू हो रहा हूं, आपसे जो कह रहा हूं वह पंजाब,भारत वह व्यापक परिप्रेक्ष्य में विश्वहित में है। जाट, सिख, हिंदू, मुसलमान और ईसाई सभी खेती करते हैं। सारे भारत में कोई डेढ़ करोड़ जाट हैं जिनमें से आधे पंजाब में बसते हैं। देश के सभी किसानों की आर्थिक दशा बड़ी दयनीय हैं और उनका कोई संरक्षक नहीं है। यूनियनिस्ट पार्टी की पंजाब में सरकार है, इसने किसान की आर्थिक दशा सुधारने के लिए कुछ प्रभावी कदम उठाए हैं जिसके कारण उन की माड़ी हालत बेहतर हुई है, हम चाहते हैं कि भारत का किसान भी आत्मनिर्भर बने, वह शोषण से मुक्त हो। जो हमने पंजाब में किसान के लिए कदम उठाए हैं, वे मद्रास जैसे प्रांत में भी अपनाए जा रहे हैं।

नोट : शेष अगले अंक में

जीना है तो गेहूं छोड सकते है ?

– डॉ. विलियम डेविस,
प्रसिद्ध हृदय रोग चिकित्सक

अमेरिका के एक हृदय रोग विशेषज्ञ हैं डॉ० विलियम डेविस .... उन्होंने एक पुस्तक लिखी थी 2011 में जिसका नाम था **'Wheat Belly'** (गेहूं की तोंद) यह पुस्तक अब फूड हेबिट पर लिखी सर्वाधिक चर्चित पुस्तक वन गई है... पूरे अमेरिका में इन दिनों गेंह को त्यागने का अभियान चल रहा है... कल यह अभियान यूरोप होते हुये भारत भी आएगा ... यह पुस्तक ऑनलाइन भी उपलब्ध हैं और कोई फ्री में पढ़ना चाहे तो भी मिल सकती है.....चौकाने वाली बात यह है कि डॉ० विलियम डेविस का कहना है कि अमेरिका सहित पूरी दुनिया को अगर मोटापे, डायबिटिज और हृदय रोगों से स्थाई मुक्ति चाहिए तो उन्हें पुराने भारतीयों की तरह मक्का, बाजरा, जौ, चना, ज्वार, कोदरा, रागी, सावां, कांगनी ही खाने चाहिये गेंहू नहीं..... जबकि यहां भारत का हाल यह है कि 1980 के बाद से लगातार सुबह शाम गेंहू खा खाकर हम महज 40 वर्षों में मोटापे और डायबिटिज के मामले में दुनिया की राजधानी बन चुके हैं... गेंहू मूलतः भारत की फसल नहीं है,यह मध्य एशिया और अमेरिका की फसल मानी जाती है और आक्रांताओ के भारत आने के साथ यह अनाज भारत आया था... उससे पहले भारत में जौ की रोटी बहुत लोकप्रिय थी और मौसम अनुसार मक्का, बाजरा, ज्वार आदि... भारतीयों के मांगलिक कार्यों में भी जौ अथवा चावल (अक्षत) ही चढाए जाते रहे हैं। प्राचीन ग्रंथों में भी इन्हीं दोनों अनाजों का अधिकतम जगहों पर उल्लेख है..... जयपुर निवासी प्रशासनिक अधिकारी नृसिंह जी की बहन विजयकांता भट्ट (81 वर्षीय) अम्मा जी कहती हैं कि 1975–80 तक भी आम भारतीय घरों में वेजड़ (मिक्स अनाज) की रोटी या जी की रोटी का प्रचलन था जो धीरे धीरे खतम हो गया। 1980 के पहले आम तौर पर घरों में मेहमान आने या दामाद के आने पर ही गेंहू की रोटी बनती थी और उस पर घी लगाया जाता था, अन्यथा जौ ही मुख्य अनाज था... आज घरवाले उसी जड़ की रोटी को चोखी धाणी में खाकर हजारों रुपए खर्च कर देते हैं..... हम अक्सर अपने ही परिवारों में बुजुर्गों के लम्बी दूरी पैदल चल सकने, तैरने, दौड़ने, सुदीर्घ जीने, स्वस्थ रहने के किस्से हैं। वेसब मोटाअनाज हीखाते थे गेंहूनहीं। एक पीढ़ी पहले किसी का मोटा होना आश्चर्यकी बात होती थी, आज 77 प्रतिशतभारतीय ओवरवेट हैं और यह तब है।जब इतने ही प्रतिशत भारतीय कुपोषित भी हैं... फिर भी 30 पार का हर दूसरा भारतीय अपनी तोंद घटाना चाहता है..... गेंहू की लोच ही उसे आधुनिक भारत में लोकप्रिय बनाये हुये है क्योंकि इसकी रोटी कम समय और कम आग में आसानी से बन जाती है... पर यह अनाज उतनी आसानी से पचता नहीं। है... समय आ गया है कि भारतीयों को अपनी रसोई में 80–90 प्रतिशत अनाज जौ, ज्वार, बाजरे आदि को रखना चाहिये और 10–20 प्रतिशत गेंहू को... हाल ही कोरोना ने जिन एक लाख लोगों को भारत में लीला है उनमें से डायबिटिज वाले लोगों का प्रतिशत 70 के करीब है... वाकई गेहूं त्यागना ही पड़ेगा.... अन्त में एक बात और भारत के फिटनेस आइकन 54 वर्षीय टॉल डार्क हेंडसम **(TDH)** मिलिंद सोमन गेंहू नहीं खाते हैं.... मात्र बीते 40 बरसों में यह हाल हो गया है तो अब भी नहीं चेतोगे फिर अगली पीढ़ी के बच्चे डायबिटिज लेकर ही पैदाहोंगे...

शेष– समझदार को इशारा ही काफी है।

'न्यू यॉर्क टाइम्स' के सबसे अधिक बिकने वाली किताब शैमंज ठमससलश(गेहूं की तोंद) में से लिया गया अंश।

Quit India Movement-the harbinger of Indian independence

- R.N. Malik

81 years ago, on 8th August 1942, at Gowalia Tank ground (now August Kranti ground) in central Bombay, Mahatma Gandhi gave the clarion call to Britishers to quit India for good and to the people of India to participate in the Quit India Movement to seek freedom from the foreign yoke. The idea of launching this Movement came to Gandhi Ji's mind after the tragic failure of Cripps Mission in March 1942 and Japanese forces knocking at Indo-Burma border in June 1942 and showing aggressive signs of attacking India at any time. Gandhi Ji correctly thought that Japanese would not attack India if Britishers were made to quit from there. Accordingly, the proposal of a innitiating a mass Movement in this respect, called 'Quit India Movement' was approved by the Congrress Working Committee (CWC) on 14th July and a 2--days session of All India Congress Committee (AICC) was called on 7th August at Bombay for final ratification.

An audience of 50000 people came to attend the session on 7th August and the atmosphere at the session was electric and reminiscent of the Lahore session of December1929. Maulana Azad presided over the session. Jawaharlal Nehru moved the resolution and Sardar Patel seconded it. In his speech on the first day, Gandhi Ji addressed the audience by saying that the Quit India Movement would have much more historic significance than the French and Russian revolutions provided the people remained nonviolent and maintained communal harmony even in the face of grave provocation.

But the crunch came on the next day i.e. the 8th August. AICC ratified the decision of CWC of launching a nonviolent mass Movement for the sake of attaining independence from the Empire (Raj) and authorised Gandhi Ji to take charge of the whole Movement and guide his soldiers accordingly. It was then, Gandhi Ji got up and delivered the most memorable speech of his life. He said,"Congress must win freedom or get wiped out in the endeavour. Now onward, everyone of you should feel and act like a free man and no longer think to be under the heels of imperialism. Here is a short Mantra I give to all of you . You may imprint it on your hearts and let every breath of yours give expression to it. The Mantra is 'Do or Die' and you will either free India or die in the attempt. Take a pledge before the God with your conscience as your witness, that you will no longer rest till freedom is achieved and you will lay down your lives in an attempt to achieve it....." This Subhash Bose like speech mesmerised and surcharged the audience and the nation as a whole after it was published in the newspapers.

Gandhi Ji and other leaders returned to Birla House around midnight. Gandhi Ji believed that he and others would be arrested only after announcing the date of launching the Movement. Churchill directed the Viceroy Linlithgow for deporting Gandhi Ji to Aden and top leaders to Nyasaland. But the Viceroy did not agree because of possible angry backlash and directed.the police to arrest top leaders during wee hours of the next day. As a result, Gandhi Ji and CWC members (Sardar Patel, Prasad, Azad, Nehru and six more) were arrested at 4a.m on 9th August. Gandhi Ji, Kasturba Ji, Mahadev Desai and Susheela Nayar were taken to the Agha Khan Palace (AKP) at Poona and CWC members at Ahmadnagar fort. Before boatding the police van, Gandhi Ji dictated a message to Piareylal Nayar (brother of Dr.Susheela Nayar) to be disseminated to all the Satyagrahis of the Movement. The message read," Let all the nonviolent soldiers of the Freedom Movement write the slogan 'Do or Die' on a piece of paper or cloth and stick it on his shirt so that in case he died during the movement, he might be distinguished by that slogan as a nonviolent soldier."

A week after the arresrt, Mahadev Desai (the most brilliant, devoted and trustworthy Secretary of Gandhi Ji) died after sudden collapse on 15th August and cremated there.. Gandhi Ji could bear this tragic loss but not Kasturba Ji. She too died 18 months later on 22nd Feb,1944 and she too was cremated there. Gandhi Ji also bore this bereavement stoically. But college students were in tears throughout the country on this occasion. Gandhi Ji developed severe malarial and intestinal infections inn April 1944 and was on the brink of death. Churchill wanted him to be cremated in the Palace itself in case he died due to illness. But Wavell did not agree and released him on 5th May 1944 after a detention of 21 months. Gandhi Ji went to the Nature Cure clinic of his friend Dinshaw Patel in Poona and got the infection cured after few weeks..

The Viceroy, Lord Wavell correctly gauged the

mood of the nation's anger across length and breadth of the country because of large number killings and arrests during the Movement. British soldiers in India too plainly told Wavell that they wanted to go home after the war. So Wavell went to London in March 1945 and prevailed upon hardcore Churchill and other leaders to effect transfer of power to Indians and leave India on a friendly note. He returned to India after three months in June 1945 and released all the CWC leaders from jails on 27th June after spending 34 months in detention. Sardar Patel remarked,"Our cause would have been lost for ever had the 8th August resolution not been ratified. Now the independence is approaching like a roaring flood."

Elections were held in England on 5th July and Labour party came to power and Clement Richard Attlee became the Prime Minister. Attlee had always been sympathetic to Indian cause. After the failure of Simla Conference, Attlee sent the. Cabinet Mission in March 1946 consisting of Pethic Lawrence, Stafford Cripps and A.V. Alexender to find out a way for hassel free transfer of power to India. But the Cabinet Mission Plan could not succeed due to the obstructive approach of Muslim League ministers in the coalition interim government headed by Jawaharlal Nehru. Fed up with daily bickrings, Attlee announced in February 1947 that England would leave india by June 1948 by transferring power to provinces if no agreed solution was arrived at by that time and sent Lord Mountbatten in March 1947 to replace Wavell as the new Viceroy and asked him to complete the formalities of transfer of Power before June 1948. Mountbatten quickly went with his job and to cut long story short, with the tacit support of Sardar Patel he was able to transfer power to India and Pakistan on 15th and 16th August 1947 respectively though at the cost of division of the country and pogrom of lacs of Hindus and Muslims in Panjab

The second phase of freedom was achieved when 565 princely states were made part of one united India by 1948 due to the combined efforts of Sardar Patel, V.P. Menon and Lord Mountbatten. The third phase of complete independence was accomplished when these princely states like PEPSU were merged in the Indian states in 1956 and lost their complete identities. This is how the Quit India Movement launched on 9th August 1942 ultimately paved the way for India's freedom.

वैवाहिक विज्ञापन

- SM4 Jat Girl (DOB Nov 94) 28/5'2" NET in Commerce, B.Ed., HTET, PGT Commerce, Pursuing PhD. From M.D. U. Worker as Guest Faculty at CDLU Sirsa. Presently working at M.K.J.K. College Rohtak. Father in Haryana government. Mother housewife. Avoid Gotras: Gill, Goyat, Ahlawat. Cont.: 9416193949
- SM4 Jat Girl (DOB 15.08.93) 29/5'5" MBBS. from Shah Medical College Rewa, (Madhya Pradesh), DNB Gynecology in Jasola Apollo Hospital New Delhi with stipend Rs. 66000/- PM. Attending ongoing counseling of NEET PG. Father ex-serviceman . Mother housewife. Avoid Gotras: Siwach, Deswal, Mann. Cont.: 9467220190, 9991257014
- SM4 Jat Girl (DOB 28.01.90) 33/5'3" Working as Class-I officer in Haryana Government. Package Rs. 25 lakh PA. Avoid Gotras: Sangwan, Dahiya, Khatri. Cont.: 8708116691, 8398836161
- SM4 Jat Girl (DOB 1995) MBBS., Doing M. D. Father was Air Force officer. Mother Haryana Government employee. Family settled at Panchkula. One brother married and employed in IT Co. Avoid Gotras: Nain, Malik. Cont.: 9876633101
- SM4 Jat Girl (DOB 11.09. 95) 27/5'5" B.Sc. Nursing, M.A. Preparing for UPSC. Employed as Nursing Officer n PGI Chandigarh. Father retired Government employee. Family settled at Chandigarh. Avoid Gotras: Kaliraman, Jani, Pawar. Cont.: 9416083928
- SM4 Jat Girl (DOB 26.01.2001) 23/5'5" B.A., ITI (Steno English). Pursuing M.A. Willing to go Abroad. Father in Haryana Police. Mother housewife. Avoid Gotras: Dhull, Tomar, Khatri. Cont.: 7988991837, 8178530356
- SM4 Jat Girl (DOB 07.09.94) 28/5'6" BA, B.Ed., MA (History), NIT, CTET, PRT qualified. Father Superintendent in ULB at Panchkula. Avoid Gotras: Bhakar, Sheoran, Dahiya. Cont.: 9463436817
- SM4 Jat Girl (DOB 26.09.97) 25/5 feet. B.Sc., M.Sc. Microbiology from SRM University Sonepat. Working as Lecturer in Dental College, Derabssi (Punjab). Father ASI in Chandigarh Police. Family settled at Baltana (Punjab). Avoid Gotras: Rathi, Hooda, Mann. Cont.: 9814227637
- SM4 Jat Girl (DOB 28.01.96) 27/5'2" B.A., JBT. Employed in Centre Government U. T. Chandigarh on contract basis. Avoid Gotras: Nehra, Sangwan, Punia. Cont.: 9815219007
- SM4 Jat Girl (DOB 23.08.94) 28/5'2" LLB, LLM. Father employed in Government of India. Mother housewife. Family settled at Zirakpur (Punjab). Gotras: Hooda, Ahlawat, Siwach. Cont.: 7696046215, 8360153519
- SM4 Jat Girl (DOB Nov. 2001) 22/5'4" B.Sc. (Non-Medical). Doing B.Ed. Avoid Gotras: Mor, Ahlawat, Malik. Cont.: 9466086781
- SM4 Jat Girl (DOB 08.08.97) 25/5'1" B. Tech from PEC Chandigarh. Employed in MNC Banglore with Rs. 12 lakh package PA. Father retired Class-1 officer from Haryana Government. Mother teacher in Haryana government. Avoid Gotras: Malik, Phaugat, Dhankhar. Cont.: 9463962490
- SM4 Jat Girl (DOB 31.01.95) 28/5'1" B.Sc., M.Sc. (Botany). UGC, NET qualified. Pursuing Ph.D from P. U. Chandigarh. Father in Government job. Mother housewife. Family settled at Ambala Cantt (Haryana). Avoid Gotras: Rathi, Kharb, Rana. Cont.: 9812238950

- SM4 Jat Girl (DOB 13.10.91) 29/5'5" BA, LLB (Hons.), LLM in Criminal Law, Diploma in Labour Law, Diploma in Administrative Law, Ph.D in International law. Employed in Education Department, Haryana. Avoid Gotras: Malik, Deswal. Cont.: 9417333298
- SM4 Jat Boy (DOB 06.04.91) 32/5'11" B.Tech. from PEC Chandigarh. IIT-JEE (Advanced). Working as Math Faculty at Allen Career Institute Chandigarh. Salary Rs. One lakh per month. Avoid Gotras: Malik, Ahlawat. Cont.: 9416293888
- SM4 divorced (without issue) Jat Boy 45/6'3" Lieutenant Colonel in Indian Army. Mother Doctor Ayurvedic Own Clinic. Family settled at Nayagaon (Punjab). Avoid Gotras: Tomar, Malik. Cont.: 8847034750.
- SM4 Jat Boy 32/5'8" HCS, Employed as A class Tehsildar at Narnounl (Haryana). Father retired Government employee. Mother housewife. Family settled at DLF Panchkula. Avoid Gotras: Malik, Narwal, Rathi. Cont.: 9812208238
- SM4 Jat Boy (DOB 25.12.96) 26/5'10" B.E. (Civil). Employed as J.E. in Punjab Government at Mohali. Father class-II officer in Centre Government. Mother also employed. Elder brother Caption in Army. Avoid Gotras: Dalal, Mor, Sindhu. Cont.: 7973431263, 8528488299
- SM4 Jat Boy (DOB 30.12.94) 28/5'11" B.A. Working as Clerk in Haryana Consumer Disputes Redressal Commission Panchkula. Father retired from Haryana Civil Secretariat. Mother housewife. Family settled at Panchkula. Avoid Gotras: Mor, Dhariwal, Chahal. Cont.: 9416603097
- SM4 only son Jat Boy 30/5'9" Convent educated. MSW from Australia. Employed as Government officer in Australia. Father and mother retired officers from Haryana Government. Own house in Australia. Family settled at Yamuna Nagar (Haryana). 12 acre agriculture land. Avoid Gotras: Sheoran, Chahal, Dhanda. Cont.: 9518680167
- SM4 divorced Jat Boy 34/5'11" MBA, previously job. Ran café for five years. Interested in doing business. Income Rs. 85000/- PM. Father retired Deputy Commissioner Central Excise. Mother Entrepreneur. (Previously Lecturer in Haryana government). Avoid Gotras: Ahlawat, Dahiya, Sindhu. Cont.: 9967435637
- SM4 Jat Boy (DOB 01.10.93) 29/5'10" B.Tech (ECE), from GJU Hisar (Haryana), PGDCA, MBA. Working in Infosys as Team Lead Engineer with package Rs. 11 lakh PA. Family settled at Jind (Haryana). Avoid Gotras: Malik, Sheoran, Sindhu. Cont.: 9812157267, 7015713669.
- SM4 Jat Boy (DOB 27.09.95) 27/5'9" MBBS from M.M.U Solan (H.P). Father Sub-Inspector in Haryana Police. Avoid Gotras:Phaugat, Gill, Dahiya. Cont.: 9812011590
- SM4 Jat Boy (DOB 10.03.96) 27/5'10" Hotel Management. PR Canada. Family settled at Mohali (Punjab). Avoid Gotras: Malik, Hooda, Rana. Cont.: 7696844991, 8872937444
- SM4 Jat Boy (DOB 15.08.98) 24/5'11" B.Tech. (CSC). Working as Developer Software Engineer at Banglore with Rs. 17 lakh package PA. Father retired from All India Radio. Mother housewife. Two sisters settled in Australia. Family settled at Kurukshetra. Seven acre agriculture land. Avoid Gotras: Narwal, Relha. Cont.: 9466588288
- SM4 Jat Boy 27/6 feet. B. Tech. Working in private job with package Rs. 5 lakh. Father Ex-serviceman IAF. Mother housewife. Brother in Centre Government job. Family settled in Sonepat. Avoid Gotras: Malik, Dahiya, Kaliraman, Behrman. Cont.: 7986151580
- SM4 Jat Boy (DOB 17.11.96) 26/5'9" B. Com. (H), M.Com. Business owner of Pharmaceuticals Co. in Rai Industrial Area. Earning 5 crore PA. Father property & financial consultant. Mother housewife. Family settled at Sonepat. Avoid Gotras: Rathi, Narwal, Dahiya. Cont.: 9215642675
- SM4 Jat Boy (DOB 15.02.89) 34/6'1" M.A. English. Employed in Distt. Court Mohali as Ahlmad/Clerk on regular basis. Father Superintendent in ULB at Panchkula. Avoid Gotras: Bhakar, Sheoran, Dahiya. Cont.: 9463436817
- SM4 Jat Boy 28/5'8" B.Tech. (Petroleum Engineering) MBA, Oil & Gas Management. Working in MNC with package Rs. 18 lakh PA. Father retired from Indian Navy. Mother housewife. Match preferred from Tri-city. Family settled at Pinjore (Panchkula). Avoid Gotras: Chahal, Mann, Sheoran. Cont.: 8010985773
- SM4 divorced having nine year old son Jat Boy (DOB 27.11.88)) 34/5'9". Post Graduate Economics. Employed as Godown In-charge in Haryana State Warehousing Corporation. Salary Rs. 50000/-. Own house at Jind. Seven acre agriculture land at village. Avoid Gotras: Boora, Mor. Cont.: 9416131270
- SM4 Jat Boy (DOB 17.10.94)) 28/5'9". B. Tech. Electronic Engineering. MBA (HR Marketing). Employed as TITLE Programme Assistant Manager in (Dullberry Co. Bilaspur) Gurugram. Salary Rs. 5 lakh PA. Family settled at Rewari. Avoid Gotras: Dhillon, Sangwan, Suhag. Cont.: 9468057880
- SM4 Jat Boy (DOB 05. 09.96)) 26/5'10". B. Tech. IIT Delhi. Working as Software Engineer in Tokyo, Japan with a salary package of Rs. One crore per annum. Boy may relocate after marriage. One brother also Software Engineer. Father senior Government officer. Family settled at Panchkula. Avoid Gotras: Khokhar, Gurawalia, Mor. Cont.: 9876221778
- SM4 Jat Boy (DOB 01.07.94) 28/6'1" BA, LLB, (VIPS, IP University). LLM (Kurukshetra University). Advocate (Working under AOR in Supreme Court, Giving Judicial Exams). Father farmer, social worker. Mother housewife. Elder sister LELTS Trainer, Pursuing PhD. Avoid Gotras: Rana, Dahiya, Sehrawat. Cont.: 9136235051
- SM4 Jat Boy 28/5'11" Team leader in Mohali. Family settled at Zirakpur. (Punjab). Avoid Gotras: Naidu, Nain, Khatkar. Cont.: 9034837334, 9217126815.
- SM4 Jat Boy (DOB 11.03.92) 31/6'4" B. Tech in Textile. Working in mil of textile as Technical Officer at Surat. Father retired JCO. Mother housewife. Preferred girl in Centre Government job of at least 5'4" height between 25-30 years' age. Avoid Gotras: Tomar, Kadian, Phogat. Cont.: 9416520843
- SM4 Jat Boy (DOB 26.05.94) 29/6’3” B. Tech. (Mechanical). Lives in Canada. Father in Government job. Mother Government teacher. Younger brother in Canada. Avoid Gotras: Shyan, Punia. Cont.: 9416877531, 9417303470

किसान के बेटे गांव बुढेड़ी के निर्मल पंघाल का बतौर साइंटिस्ट भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान (इसरो) में हुआ चयन

गौरतलब है कि निर्मल के पिता पवन पंघाल बीआरसीएम शिक्षण संस्थान बहल में रजिस्ट्रार के पद पर कार्यरत है । उन्होंने बताया की निर्मल ने बाहरवीं तक की पढाई बीआरसीएम में करने के बाद जेई एडवांस का पेपर पास किया व बीटेक (एयरोस्पेस) भारतीय अंतरिक्ष विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान तिरुवनंतपुरम, केरला से पूरी की।भारतीय अंतरिक्ष विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान तिरुवनंतपुरम अंतरिक्ष विभाग, भारत सरकार का एक ऑटोनोमस संस्थान है । जिन बी.टेक छात्रों ने 7.5ध्10 और उससे अधिक का सीजीपीए स्कोर किया है, उन्हें सीधे इसरो के विभिन्न केंद्रों में चयन किया जाता है। निर्मल ने 8.42 सीजीपीए स्कोर प्राप्त किया। भारतीय अंतरिक्ष विभाग द्वारा निर्मल का चयन स्पेस एप्लीकेशन सेंटर अहमदाबाद में किया गया है । निर्मल पंघाल ने बताया की जे ई एडवांस क्लियर करने के बाद मुझे आईआईटी पटना में भी सीट अलॉट हुई थी और साथ ही भारतीय अंतरिक्ष विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान केरला में। अंतरिक्ष के क्षेत्र में अभी बहुत अनुशंधान होना है व इसमें मेरी रूचि भी थी इसलिए आईआईएसटी केरला को चुना !

जाट सभा चण्डीगढ़, पंचकूला एवं चौ० छोटूराम सेवा सदन कटरा–जम्मू के समस्त सदस्यगण तहदिल से मुबारकबाद देते हुए उनके उज्जवल भविष्य की कामना करते है व समस्त परिवार के सुखद स्वास्थ्य एवं मंगलमय भविष्य के लिये परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करते है।

Qualified UGC Net

संजीव कुमार सुपुत्र श्री सतीश कुमार ने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग में (UGC NET) 2023 किया। जाट सभा चण्डीगढ़, पंचकूला एवं चौ० छोटूराम सेवा सदन कटरा–जम्मू के समस्त सदस्यगण तहदिल से मुबारकबाद देते हुए उनके उज्जवल भविष्य की कामना करते हुए समस्त परिवार के सुखद स्वास्थ्य एवं मंगलमय भविष्य के लिये परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करते है।

शोक संदेश

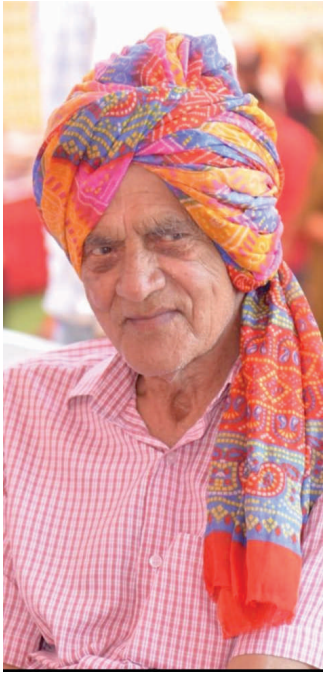

जाट सभा चंडीगढ़/ पंचकूला एवं चौधरी छोटू राम सेवा सदन कटरा, जम्मू के आजीवन सदस्य एवं भारतीय पुलिस सेवा के वरिष्ठ (सेवानिवृत) अधिकारी चौधरी लखीराम पूनिया का लगभग 93 वर्ष की लम्बी आयु में 14 अगस्त 2023 को स्वर्ग सिद्धार गये।

चौधरी लखीराम पूनिया का जन्म 21 सितंबर 1930 को बिचपड़ी गांव, जिला सोनीपत में एक किसान परिवार में हुआ। शिक्षा ग्रहण करके अपने लगन व मेहनत के बलबूते पर पंजाब पब्लिक सर्विस कमिशन में डायरेक्ट पुलिस इंस्पेक्टर नियुक्त होकर संयुक्त पंजाब में उपपुलिस अधीक्षक व अलग हरियाणा प्रांत बनने पर हरियाणा पुलिस कैडर तथा बाद में भारतीय पुलिस सेवा में प्रवेश करने का गौरव प्राप्त किया। जिन्होंने अपनी समस्त सेवा के दौरान अपने सिद्धांतों व स्वाभिमान से कभी समझौता नहीं किया।

प्रदेश के पहले मुख्यमंत्री पंडित भगवत दयाल शर्मा जी, मास्टर हुकुम सिंह, श्री बनारसी दास गुप्ता, चौधरी देवीलाल, चौधरी बंसीलाल व चौधरी भजनलाल सभी मुख्यमंत्रियों ने उनके कार्यकाल में उनके उल्लेखनीय कार्यों व मजबूत कानून व्यवस्था की प्रशंसा की, जिस कारण उनको आज भी एक दबंग पुलिस अधिकारी के तौर पर जाना जाता है। चौधरी लखीराम एक सुलझे हुए अनुभवी पुलिस अधिकारी रहे, जिस कारण उनके कार्यकाल में कहीं भी दंगा फ्साद नहीं हुआ। जब प्रदेश में आतंकवाद का माहौल था, उस समय भी उन्होंने संयम व सुझबूझ से शांति बनाए रखी।

वे किसान मसीहा दीनबंधु चौधरी छोटू राम की किसान व समाज सुधारक नीतियों के सदैव कायल रहे। चौधरी लखीराम आज हमारे बीच नहीं रहे लेकिन उनकी मिलनसार सादगीपूर्ण, स्पष्टवादी व संघर्षशील छवि पहचान के तौर से हम सबके लिए स्मरणीय रहेगी।

जाट सभा का समस्त परिवार दिवंगत आत्मा को प्रभु चरणों में स्थान देने तथा उनके सुपुत्र श्री ध्यान सिंह पुनिया, कमांडेन्ट थर्ड बटालियन हरियाणा पुलिस हिसार, पुत्रवधू प्रोफेसर सविता पूनिया, दामाद डॉ० महेन्द्र सिंह मलिक, आईपीएस (सेवानिवृत्त) पूर्व पुलिस महानिदेशक हरियाणा, श्री राम सिंह मलिक, पूर्व खाद्य आपूर्ति डिप्टी डायरेक्टर हरियाणा, सुपुत्री श्रीमती कृष्णा मलिक, चेयरपर्सन चौधरी भरत सिंह मेमोरियल शिक्षण संस्थान निड़ानी, जींद अन्य सभी परिवार जनों व निकट संबंधियों को इस असहनीय आघात को सहन करने की नैतिक शक्ति प्रदान करने हेतु परम पिता परमेश्वर से अरदास करते है।

ओम शांति! ओम शांति! ओम शांति!

आर्थिक अनुदान की अपील

प्रिय साथियों, भाई–बहनों एवं बुजुर्गो,

आपको जानकर प्रसन्नता होगी कि गांव नोमैई, ग्राम पंचायत कोटली बाजालान कटरा–जम्मु में जी.टी. रोड़ 10 पर चौ० छोटूराम यात्री निवास कटरा के लिये प्रस्तावित 10 कनाल भूस्थल पर चार दिवारी का निर्माण शुरू हो चुका है जिस पर अभी तक 18 लाख रुपये खर्च हो चुका है और इस पर लगभग 40 लाख रुपये खर्च होगा। यात्री निवास स्थल पर विकास एवं पंचायत विभाग कटरा द्वारा सरकारी खर्च से दो महिला व पुरूष शौचालय एवं स्नानघर का निर्माण पहले से किया जा चुका है और यात्री स्थल की लिंक रोड़ पर छोटी पुलिया के निर्माण हेतु पी०डब्ल्यू०डी० (बी एण्ड आर) विभाग कटरा द्वारा 29 लाख की ग्रांट स्वीकृत हो चुकी है और इस वर्ष ग्रांट राशि जारी होते ही पुलिया का निर्माण हो जायेगा।

यात्री निवास भवन का शिलान्यास व दीन बंधु चौधरी छोटू राम को विशालकाय प्रतिमा का अनावरण 10 फरवरी 2019 को बसंत पंचमी उत्सव एवं दीनबंधु चौधरी छोटूराम की 136वीं जयंती समारोह के दौरान महामहिम राजपाल, जम्मु काश्मीर माननीय श्री सत्यपाल मलिक द्वारा तीन केंद्रीय मंत्री चौधरी सिंह केंद्रीय राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) पीएमओ डा जितेंद्र सिंह व जाट सभा के अध्यक्ष एवं हरियाणा के पूर्व पुलिस महानिदेशक डा एम एस मलिक, भा०पु०से० (सेवानिवृत) की उपस्थिति में संपन्न किया गया।

यात्री भवन में फैमिली सुईट सहित 300 कमरे होगें। जिसमें मल्टीपर्पज हाल, कांफ्रैंस हाल, डिस्पेंसरी, मैडीकल स्टोर, लाइब्रेरी, बच्चों की प्रतिभा विकास एवं विभिन्न व्यवसायिक व सुरक्षा संबंधी सेवाओं में प्रवेश के लिए कोचिंग की विशेष सुविधाएं उपलब्ध होगी। सुरक्षा सैनिकों, शहीद परिवारों व उनके आश्रितों के लिए मुफ्त ठहरने तथा माता वैष्णों देवी के बदलुओं के लिए विशेष सुविधाएं प्रदान की जाएगी। यात्री निवास के निर्माण के लिये श्री राम कंवर साहु सुपुत्र श्री पूर्ण सिंह, गांव बीबीपुर जिला दान निवासी मकान नं0 110 सुभाष नगर, रोहतक द्वारा 5,11,111 रुपये तथा श्री सुखबीर सिंह नांदल, निवासी मकान नं. 426–427, नेमी सागर कालोनी, वैशाली नगर, जयपुर द्वारा 5,01,000 रुपये तथा श्री देशपाल सिंह निवासी मकान न0 990, सैक्टर–3, कुरुक्षेत्र (हरियाणा) द्वारा 5,00,000 रुपये की राशि जाट सभा को दान स्वरूप प्रदान की गई है।

अतः आप सभी से नम्र निवेदन है कि इस कल्याणकारी व पुनित सामाजिक कार्य के लिए स्वेच्छा अनुसार शीघ्र अनुदान देने की कृपा करें ताकि चार दिवारी पूरी होने के बाद निर्माण कार्य शुरू किया जा सके जोकि आज सभी के सहयोग से ही सम्भव हो सकेगा। यदि कोई दानी सज्जन यात्री निवास में कमरे के निर्माण हेतु 5 लाख रूपये या इससे अधिक की राशि दान देता है तो उसका नाम भवन परिसर में उचित स्थान पर अंकित किया जाएगा। यात्री निवास भवन के लिए अनुदान देने वाले सज्जनों का उचित विवरण रखा जाएगा और उनका नाम सभा द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिका 'जाट लहर' में भी प्रकाशित किया जाएगा। भवन निर्माण की अनुदान राशि चैक, डिमांड ड्राफ्ट द्वारा 'जाट सभा चंडीगढ़' के पक्ष में जाट भवन 2–बी, सैक्टर 27–ए, मध्य मार्ग, चंडीगढ़ में भेजी जा सकती है अथवा आर.टी.जी.एस की मार्फत सीधे जाट सभा के बचत खाता नंबर 50100023714552, आईएफएससी कोड– एचडीएफसी 0001324 में ट्रांसफर की जा सकती है। अनुदान की राशि आयकर अधिनियम की धारा 80–जी के तहत आयकर से मुक्त है।

निवेदक : कार्यकारिणी जाट सभा चंडीगढ़/पंचकुला,
चौधरी छोटू राम सेवा सदन, कटरा, जम्मू

सम्पादक मंडल

सरंक्षक एवं सम्पादक : डा. एम.एस. मलिक, आई.पी.एस. (सेवानिवृत)
सह–सम्पादक : डा० राजवन्तीमान
साज सज्जा एवं आमुख : श्री आर. के. मलिक
प्रकाशन समिति : श्री बी.एस. गिल, मो० : 9888004417
श्री जे.एस. ढिल्लो, मो० : 9416282798
वितरक : श्री प्रेम सिंह, कार्यालय सचिव, जाट भवन, चण्डीगढ़

जाट भवन 2–बी, सैक्टर 27–ए, चण्डीगढ़
फोन : 0172-5086180
Email: jat_sabha@yahoo.com; Website: www.jatsabha.org

सर छोटूराम जाट भवन, सैक्टर–6, पंचकूला
फोन : 0172–2590870, Email: jatbhawan6pkl@gmail.com

चौधरी छोटू राम सेवा सदन, कटरा, जम्मू

Postal Registration No. CHD/0107/2021-2023

RNI No. CHABIL/2000/3469

मुद्रक प्रकाशन एवं सरंक्षक सम्पादक डा. एम. एस. मलिक ने जाट सभा, चंडीगढ़ के लिए एसोशियटिड प्रिन्टर्ज़, चंडीगढ़, फोन : 0172–2650168 से मुद्रित करवा कर जाट भवन, 2–बी, मध्यमार्ग, सैक्टर 27–ए, चंडीगढ़ से प्रकाशित किया।